Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi gen. 29

13. C. 57.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

Jüsubodh.

Sishoo Bodh

शिशुबोध

जो

हस्बुल हुक्म जनाब जान. सी. नैस्फ़ील्ड साहब बहादुर
पूर्व्व डैरेक्टर आफ़ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन सूबह अवध की

आज्ञानुसार

छुफ़ी ब्रुस्तबियां नक्ल उर्दू से देवनागरी अक्षरों में रायदुर्गाप्रसाद
साहब के प्रबन्ध से बनाई गई
श्री मन्महाराजाधिराज पश्चिम देशाधिकारी श्री युत नव्वाब लेफ़्टि
नेण्ट गवर्न्नर बहादुर की

आज्ञानुकूल

अवधदेशीय देहाती और क़स्बाती विद्यार्थियों के लिये
श्रीमहिद्यासम्पन्न श्री साहिब इन्स्पेक्टर जनरल दीरक्ता
आफ़ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन पश्चिमोत्तर व अवध देशीय की
अनुमति से

लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापा गया
जून सन् १८८१ई०

शिशुबोध का सूचीपत्र ॥

सबक़	बिषयमें	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१	बिक्टोरिया के बयान में, ...	२	३
२	मलिकहमीदुज्जमा केस्वभाव में, .. .	३	४
३	सफाई के बयान में, ...	४	४
४	सिकन्दर के बयान में, ...	४	५
५	राजापुरु और सिकन्दर के बयान में, ..	५	६
६	सिकन्दर के लौटने के बयान में, .. .	६	७
७	पढ़ने के बयान में, ...	७	८
८-९	हुक्म के बयान में, ...	८-९	९-१०
१०	रेलगाड़ी के बयान में, ...	१०	११
११	रबर के बयान में, ...	११	१२
१२	भाफके जहाज़ के बयान में, ...	१२	१२
१३	छोटीइलायची औ जायफरकेबयान में, .	१२	१३
१४-१५	धातों के बयान में, .. .	१३-१४	१४-१५
१६	शक्ल ज़मीन के बयान में, .. .	१५	१६
१७-१८	भाईबहिन की बातचीत, ...	१६-१६	१७-१८
१९	रोटी के बयान में, .. .	१८	१९
२०	अकबरबादशाह के बयान में, ...	१९	२०
२१-२२	घोड़े और ऊंट के बयान में, .. .	२०-२१	२१-२२
२३	रूयज़मीनकीखुस्कीवतरी केहिस्सोंके बयान में,	२२	२४
२४	हिन्दुस्तानकी शक्ल और अर्जवतूलके बयान में,	२४	२५
२५	हिन्दुतानकी लम्बाईचौड़ाईऔरआबादीकेब०में,	२५	२६
२६	हिंदुस्तान के पहाड़ों के बयान में, ...	२६	२६
२७	मगर के बयान में, .. .	२७	२८
२८	सूर्य्य के बयान में, ...	२८	२९
२९	दियानतदारी के बयान में, .. .	२९	३०
३०	सूबेअवध के बयान में, ...	३०	३१
३१	दारचीनी और लौंग के बयान में, .	३१	३२

सबक़	बिषयमें	पृष्ठसे	पृष्ठतक
३२	संज्ञा के कारकों के बयान में, .. .	३२	३३
३३	कांच के बयान में, ...	३३	३४
३४	अवध के हाकिमों के बयान में, .	३४	३५
३५	सल्तनत अवध के बयान में, .. .	३५	३६
३६	महम्मदअ़ली शाह के बयान में, ..	३६	३७
३७	किसी राजपूतनी कीबहादुरी के बयान में, ..	३७	३८
३८	हिन्दुस्तान के दरियाओं के बयान में, .	३८	३९
३९	हिन्दुस्तान के बड़े २ हिस्सों के बयान में, ..	३९	४२
४०	हिन्दुस्तान के मशहूर शहरों के बयान में, ..	४२	४३
४१	हिन्दुस्तान के घोड़ों के बयान में, .	४३	४४
४२-४३	हाथी व हाथी की तारीफ़ों के बयान में, .	४५-४५	४६-४६
४४	सर्बनाम के बयान में, .. .	४६	४७
४५	हिन्दुस्तानके रहने वालों और उनकी बोलियों और मज़हबों और पेशों के बयान में, ..	४८	४९
४६	हिन्दुस्तान की सौदागरी औरबंदरों के बयानमें	४९	५०
४७	हिन्दुस्तान की आबवहवा के बयान में, .	५०	५०
४८	हिन्दुस्तान की पैदावारियों के बयान में, .	५०	५२
४९	गैंडे के बयान में, ...	५२	५३
५०	बादल और बिजली के बयान में, .. .	५३	५४
५१	गलीलियोसाहब के बयान में, ...	५४	५५
५२	दर्शकसर्ब्बनाम के बयान में, ...	५५	५६
५३	न्यूटनसाहब के बयान में, ...	५६	५७
५४-५५	कलम्बससाहब के बयान में, ...	५७-५८	५८-५९
५६-५७	मुल्कइङ्गलिस्तान के बयान में, ...	५९-६०	६०-६१
५८	घड़ी के बयानमें, ...	६२	६३
५९-६०	शहरलंडन के बयान में, ...	६३-६६	६७-७०

इति

शिशुबोध ॥

दीबाचः ।

परमेश्वर का शुक्र है कि किताब मुफ़ीदुल्सिबियां कुल हिन्दी और अंगरेज़ी किताबों से लेकर आसान ज़बान में जिसका समझना लड़कों को ज़ियादह मुश्किल न हो बनाई गई और अब दूसरी बार बहुत से सबक़ हिन्दुस्तानके जुग़राफ़िये के भी उसमें ज़ियादह किये गये मुदर्रिसों को हिदायत की जाती है कि लड़कोंके साफ़ पढ़ने और उच्चारण पर ख़ियाल रक्खें और नीचे लिखे हुये ऐबों को न होने देवें:—

१ हिलना ॥

२ एक लफ़्ज़को दुबारा पढ़ना॥

३ नाकमें पढ़ना यअ़नी गुनगुना कर॥

४ अटक अटक कर पढ़ना॥

५ बहुत जल्द पढ़ना जिसको पढ़ने वाला आपही न समझे ॥

६ इबारत में हर्फ़ोंको छोड़ जाना कुछ औरका और पढ़ जाना ॥

७ रागकी तरह गाकर पढ़ना॥

८ जो मक़ाम ठहरने का हो वहां न ठहरना और जहां नहीं है वहां ठहरना ॥

जिस तरह साफ़ साफ़ बातें करते हैं उसी तरह पढ़ा भी करें मुदर्रिसों को चाहिये कि सबक़ पढ़ाने के बअ़द लफ़्ज़ोंके मअ़नी लड़कों से पूछा करें और जिनको मअ़लूम न हो उनको लफ़्ज़की

अस्लियत बताकर मअ़नी बतावें और उन लफ़्ज़ोंको भी जो उसी मअ़नीके हों ख़ूब समझावें और हर एक लफ़्ज़ जितने मअ़नी के लिये आया हो सब बतावें मस्‌लन्ं पहुंचा और पहुंचे ये दोनों लफ़्ज़ जुदे जुदे मअ़नियों में आते हैं ऐसे लफ़्ज़ोंके दोनों मअ़नी बता कर जो उस मक़ाम के वास्ते ख़ास हों उनको बतावें और रोज़मर्रे की गुफ़्गू में लड़कों के उच्चारण को सहीह करते रहें इस किताब में जानवरोंकी हिकायतें और कुछ कैफ़ियत क़वायद उर्दू और जुग़राफ़ियेकी लिखी गईहै ताकि लड़कोंका जी पढ़नेमें लगे ॥

पहिला सबक़।

अय लड़को यह तसवीर मलिकह विक्टोरिया सिकंदरा क़ैसर हिन्दकी है यही तसवीर उन रुपयों पैसों और अशर्फ़ियों पर जो इंगलिस्तान और हिन्दुस्तान वग़ैरह में चलते हैं बनी है इसको अच्छी तरह पहचान लो और विक्टोरिया के मअ़नी फ़तेहमंद हैं उस्को भी ख़ूब जान लो क्योंकि जनाब मलिकह मोअ़ज़्ज़मा फ़तहमन्द भी हैं और दौलत में सिकन्दर से ज़ियादह उनकी अमल्दारी में इंगलिस्तान और जितने टापू उसके गिर्द हैं और हिन्दुस्तान और टापू सिलोन यअ़नी सरंद्वीप और सिंहापूर व मलक्का व, टापू आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड है और दक्खिनी आफ़्रिका और ब्रटिनी आमेरिका और कई एकटापू भी जो आमेरिकाके नज़दीक वाक़अ़ हैं—मअ़लूम करना चाहिये कि सूर्य हर जगह पर एकही

वक़ उदय व अस्त नहीं होता और मलिकह मोअज़्ज़माकी अमल्दारी बहुत बड़ी है इस लिये यह मशहूर है कि मलिकह मोअज़्ज़मा की अमल्दारी में किसी न किसी जगह सूर्य हमेशह रोशन रहता है ॥

दूसरा सबक़।

मलिकह मोअज़्ज़माके स्वभाव में ॥

मलिकह मोअज़्ज़मा की नेकियां और तअरीफ़ें बयान से बाहर हैं जो उमदह बातें और आदतें कि मा बाप अपने लड़के बालों में ख़ाविन्द अपनी बीबी में और लड़के मा बाप में चाहते हैं सब उनमें मौजूद हैं१६ मारिच सन् १८६१ ई० में उनकी प्रतिष्ठित माजीने और १४ दिसंबर सन्१८६१ ई० में उनके तेजस्वी ख़ाविन्द ने जोकि बड़े ख़ान्दानी थे इस दुनियांसे कूच फ़रमाया अगर्चिह इन मुसीबतों का ग़म तमाम मुल्क को हदसे ज़ियादह हुआ मगर मलिकह साहिबह को ऐसा रंज हुआ कि अक्सर तनहाई पसंद करती हैं फिर भी अदल इन्साफ़ और रऐयत की पर्वरिश में ज़रा फ़र्क़ नहीं है रिआया को ऐसे आदिल और मिहरबान बादशाह को दुआ करना दिलसे वाजिबहै जिस के अद्ल और इन्साफ़ से तमाम दुनिया को चैन हो ॥

नज़म।

आदिला विक्टोरिया शाहंशहे आली जनाब।
तेरी बख़्शिशसेहैं सारे अहल आलम कामयाब॥
जुम्लह शाहाने जहां में है तू ऐसी बे नज़ीर।
है सितारोंमें फ़लक़ पर जिस तरह माहे मुनीर॥
है रऐयत परवरी तो ख़त्म तेरी ज़ात पर।
मुल्क का आबाद रहनाहै दलील इस बात पर॥
अयसईदे ख़स्तह उनके हक़में अब तू कर दुआ।

मदह ऐसे शाह आदिलकी नहीं होगी अदा ॥
या इलाही जब तलक है गरदिशे लैलो नहार ।
साथ इक़बालो ज़फ़र्के रख तु उनको बर क़रार ॥

तीसरा सबक़ ।

सफ़ाईके बयान में ॥

पाक साफ़ रहनेसे बदनको ताक़त ज़िहन्को तेज़ी दिलको ख़ुशी हासिल रहतीहै मा बापको मुनासिबहै कि बचपनसे अपने लड़कों को पाकसाफ़ रक्खें और कपड़े मोटे या महीन जैसे मुयस्सर हों साफ़ करके पहिनाया करें मैला कुचैला न रहने दें सफ़ाईके सबब बच्चे बीमारियोंसे बचतेहैं और ज़ेहन तेज़ होताहैऔरअक़्ल आ जाती है और हमेशह वहीआदत रहतीहै लड़कोंको ख़ुदभीउसका ख़ियाल चाहिये कि सफ़ाईमें सुस्ती न करें और अपने कपड़े और बदनको साफ़ रक्खेंक्योंकि मैले कुचैले लड़कों को अक़्लमंद लोग पास बैठने नहींदेते और सब लोग उनको नीच समझतेहैं पस लड़कों को चाहिये कि हर रोज़ सुबह हाथ मुंह धोया करें और दतवनसे मुंह साफ़ किया करें और परमेश्वरका शुक्रकरें और साफ़ कपड़े पहनकर मदर्से जाया करें॥

सफ़ाई से तुम होगे हरदिल अज़ीज़ ॥
सफ़ाई से आयेगी तुम को तमीज़ ॥
लिबासो मकान बिस्तरो जिस्मकी ॥
सफ़ाई से बेहतर नहीं कोइ चीज़ ॥

चौथा सबक़ ।

सिकंदरकेबयानमें॥

सिकंदर फ़ैलक़ूस बादशाह मुल्क मकदूनियह वाक़अ रियासत यूनानका बेटा था ३५६ बर्ष पहिले हज़रत ईसाके पैदा हुआ २० बर्षकी उम्रमें तख़्त पर बैठा उसने अपनी अक़्लमंदीसे यूनानके सब ख़ुद मुख़्तार रियासतों को ताबेदार किया ३३३ बर्ष पहिले हज़रत ईसा के ३० हज़ार पियादे और पांच हज़ार सवार लेकर मुहाने

हेलिसपोंटके रास्तेसे एशियामें आया और मुल्क शाम व रूस व बाबुल व एशिया छोटा व मिस्र व फ़ारस फ़तह किये ३३५ वर्ष पहिले हज़रत ईसा के हिन्दुस्तान के इरादे से सिंध दरिया पर आया उस ज़माने में हिन्दुस्तानके बहुत छोटे२ हिस्से थे यअ़नी सिर्फ़ उत्तर में एकसौ अठारह सरदारी थीं सिकन्दर ने पहिले उनके राजाओं के पास वकील भेज कर चाहा कि वे ताबअ़दारी क़बूल करें पीछे उसके एक लाख बीस हज़ार फ़ौजसे सिंध दरिया पार होकर हिंदुस्तान में दाख़िल हुआ यहां तक कोई राजा उसके मुक़ाबिले पर नहीं आया और सिंध के पूरबी किनारेपर एक बड़ा शाहज़ादा टैक्ज़ाईल्ज़ नामने जिसका मुल्क सिंध से झेलम तक था सिकन्दर की ताबअ़दारी क़बूल की ॥

पांचवां सबक़।

राजापुरु औ सिकंदरके बयान में॥

जब सिकन्दर आगे बढ़ा तो हस्तिना पूर और देहली के पूरब तरफ़ का राजा जिस का नाम पुरू था बड़ी फ़ौज लेकर दरिया झेलम के किनारे पर जिस का पाट बहुत बड़ा था मुक़ाबिले को आया और हाथियों की ऐसी क़तार बांध दी कि सिकन्दर को पार उतरना मुमकिन न हुआ फिर सिकन्दर वहांसे पांच कोस उत्तरकी तरफ़ एक टापू दरियाफ़्त करके ग्यारह हज़ार बहादुर फ़ौज के साथ बरसात की अंधेरी रात में उस पार उतर गया तब भी राजा को यह धोखा हुआ कि सिकन्दर के कुछही आदमी इधर आगये हैं मगर जब उसका बड़ा बेटा मुक़ाबिले में आकर मारा गया तब उस को सिकन्दर के आने का यक़ीन होगया और खुद चार हज़ार सवार और दस हज़ार पियादे कच्ची क़ौम के लेकर जो ऐसे लड़ाई में होशियार न थे कि सिकन्दर से बहादुर सरदार की लड़ी भिड़ी लड़ाई में होशियार फ़ौज के धावा को ताबलाते मुक़ाबिला किया बअ़द बड़ी लड़ाई के राजा की फ़ौज

भागी मगर राजा ख़ुद बहुत देर तक लड़ता रहा अगर्चिह वह ख़ुद भी ज़ख़्मी हुआ और उस के दो बेटे मारे गये आख़िर को राजा ने ताबअदारी क़बूल की फिर भी सिकन्दरने अपनी आदत के मुआफ़िक़ राजा पुरू की बड़ी इज़्ज़त और क़द्र की और उस का मुल्क और कुछ अपनी तरफ़ से ज़ियादह करके उसको देदिया राजा भी हमेशह सिकन्दर का ताबअदार और वफ़ादार रहा फिर सिकन्दर रावी और चिनाब दरियाओंके पार उतरा और अक्सर दुश्मनोंको शिकस्त देताहुआ सतलज दरिया पर पहुंचा वहां उसे मअलूम हुआ कि मगध देश का राजा बीस हज़ार सवार और छ: लाख पियादे और नौ हज़ार हाथियों से मुक़ाबिले को तैयार है अगर्चिह सिकन्दर का इरादह था कि उस की राजधानी पाली पोथरह में भी अपना निशान गाड़ दूं लेकिन उस की फ़ौज ने जो बरसात में लड़ते २ और सफ़र करते २ तंग होगई थी हुक्म न माना और हिम्मत हारदी हरगिज़ क़दम आगे न बढ़ाया तब लाचार होकर सिकन्दर को लौट जाना पड़ा॥

छठा सबक़।

सिकंदर के लौटने के बयान में॥

सिकन्दर फ़ौज के आगे न बढ़ने से लाचार हुआ और वहां से फिर आया और सिंध की तरफ़ फिर गया और एक बेड़ा जहाजों का बनवाकर बड़ी शानसे इस दरियाके रास्ते उसके दहाने तक गया राह में जो जो क़ौमें इस दरियाके दोनों तरफ़ मिलीं उन्हें ताबअदार करलिया फिर वहां से बिलोचिस्तान और फ़ारस होकरके बड़ी मुसीबतें उठाकर बाबुलमें पहुंचा और वहां उसे बुख़ार आया और ३२ बर्ष आठ महीने की उम्र में १२ बर्ष आठ महीने राज्य करके ३२३ बर्ष हज़रत ईसा के पहिले इन्तिक़ाल किया यह बादशाह बड़ा हिम्मती और अक़्लमंद था और आलिमों की बड़ी इज़्ज़त करता था ख़ास करके अरस्तू हकीम की जिससे

आठ बर्ष पढ़ा भी था बहुत इज़्ज़त व हुर्मत करता था हालत बादशाहतमें भी उसको ख़त ख़ुतूत बदस्तूर लिखा करता था मशहूर है कि सिकन्दर कहा करता था कि फ़ैलक़ूस मेरी ज़िन्दगीका सबब हुआ है और अरस्तू ने मुझे ज़िन्दगीको नेक तौर पर बसर करना बताया है तारीख़ जानदारोंकी बनाने में जिसको अरस्तू ने पचास जिल्दों में लिखा था और अब दस जिल्दें उसकी मौजूद हैं सिकन्दर ने बड़ी मदद दी और हज़ारों आदमी सिकन्दरने एशिया व यूरुप के मुल्कों में फ़क़त इस वास्ते मुक़र्रर किये थे कि वे जुदे जुदे जानवरों के नमूने भेजा करें सिकन्दर को काव्यसे भी बड़ा शौक़ था किताब इलियड कि एक मिसल काव्य महा भारत और शाहनामह के तौर पर यूनानी ज़बान में है अक्सर अपने तकिये के नीचे रखता था और बड़े शौक़ से पढ़ा करता था॥

सातवां सबक़।

पढ़नेके बयान में॥

लड़कों को चाहिये कि क़ायदे पढ़ने लिखने के सीखें और ख़ूब याद करें तब उन के मुवाफ़िक़ इबारत अच्छी तरह साफ़ २ पढ़ा करें जो ऐब दीबाचा में लिखे हैं हरगिज़ उनकी आदत न पड़ने पावे शुरूअ से साफ़ पढ़ने में कोशिश करें साफ़ पढ़ने से यह मुराद है कि लड़का इबारत पढ़ने में लफ़्ज़ बलफ़्ज़ ख़ुद ख़ियाल करता जावे और सुनने वाला भी समझता जावे जो अलामतें नीचे लिखी हुई हैं उनको याद करना और उनके मुआफ़िक़ फ़िक़रह ख़तम होनेपर ठहरना और सवाल वग़ैरह का पहचानना ज़रूर है—पूरे बिराम की अलामत (·) पौन विरामकी अलामत(:)आधेविराम की (;) चौथाई विराम की अलामत (,) है बंबई के हिन्दुस्तानी छापे में सिर्फ़ पूरे विराम की अलामत अक्सर लिखीहोती हैं॥

(१) सवाल की अलामत (?) है इसको प्रश्नका चिन्हभी कहतेहैं ॥

(२)संबोधन और अफ़सोस और तअज्जुबकी अलामात (!) है ॥

आठवां सबक़।

हुक्म के बयान में॥

उस्ताद — हुक्म किसे कहते हैं और के तरह का होता है ॥

शागिर्द — हुक्म के मअनी अच्छे के हैं और उस की दो क़िस्में हैं अच्छा और निषेध अच्छा जैसे कोई बड़ा या उस्ताद वग़ैरह फ़र्माये कि इस किताबका पांचवां सबक़ पढ़ ॥

निषेध जैसे कोई बड़ा बूढ़ा मनअ करे कि सोहबत बुरी मत बैठ हर एक को इन दोनों क़िस्मों से हुक्म कहते हैं ॥

उस्ताद—यहतो सच है तुम मेरा हुक्म भी मानोगे ॥

शागिर्द—जी हां आप का हुक्म सिर आंखों से मानूंगा ॥

उस्ताद—भलाजो चीज़ें और काम तुम्हें पसंद हैं उन्हीं में से किसी चीज़ का या किसी काम से बाज़ रहने का मैं हुक्म करूं तो भी मानोगे ॥

शागिर्द—जी हां क्यों न मानूंगा मुझ को आप का हुक्म अपने चाह से ज़ियादह प्यारा है ॥

उस्ताद—जो चीज़ या जो काम तुम्हें नापसंद हैं उसी चीज़ के लेनेको या उसी कामके करने को मैं हुक्म करूं तोभी मानोगे ॥

शागिर्द—जी हां आप का हुक्म जान व दिल से मानना चाहिये ख़्वाह पसंद हो या नहीं किसलिये कि आप जो हुक्म फ़रमावेंगे उस में सरासर फ़ायदह ही होगा चाहे ज़ाहिर में अच्छा नज़र आये या बुरा ॥

उस्ताद —शाबाश हक़ीक़त में तुम्हारी समझ और तबीअत तेज़है अबयह बताओ कि किस किस का हुक्म मानना ज़रूर है ॥

शागिर्द—मा बाप और मालिक और हाकिमों और बादशाह और अक़्लमंदों व हकीमों और बड़ों का हुक्म मानना ज़रूर है ॥

नवां सबक़।

बाक़ी बयान हुक्म का॥

उस्ताद—यह जो तुमने अगले सबक़में बयान किया सब ठीक और दुरुस्त है लेकिन उनके सिवाय कौन है जिस का हुक्म मानना निहायत ज़रूर औ सब से ज़ियादह है॥

शागिर्द—जो मुझे मअ़लूम था मैंने अर्ज़ किया और भी कोई होगा कि जिस का हुक्म मानना बहुत ज़रूर होगा मगर इस वक़्त मेरे ख़ियाल में नहीं आता आप फ़र्मायें तो मैं याद रक्खूं॥

उस्ताद—बड़े तअ़ज्जुब की बात है कि जिस शख़्स का हुक्म मानना सब पर ज़रूर और सब हुक्मों से ज़ियादह है वह इस वक़्त तुम्हारी समझ में नहीं आता॥

शागिर्द—इस वक़्त मेरा ज़िहन नहीं पहुंचता और अ़क़्ल काम नहीं करती आप बतलायें तो अच्छाहै॥

उस्ताद—याद रक्खो सबसे पहिले परमेश्वर का हुक्म मानना चाहिये जो हम सब का पैदा करने वाला और रिज़्क़ देने वालाहै हमेशह खाना देताहै और परवरिश करताहै॥

मा बाप से ज़ियादह चाहताहै और दिन रात की आफ़तोंसे बचाता है ऐसे दाता का हुक्म बजालाना और उसकी ताबअ़दारी में सिर झुकाना निहायत ज़रूरहै॥

शागिर्द—ठीक है मुझे भी मअ़लूम था मगर इस वक़्त याद न आया सब से पहिले उसका हुक्म मानना चाहिये॥

उस्ताद—मैं तुम्हें हुक्मदूं कि पढ़ो और मनअ़ करूं कि बेकार न फिरो और तुम ज़बान से इक़रार कर के मुवाफ़िक़ हुक्म के अमल न करो तो उस वक़्त में भी तुम पर हुक्म मानना सचहोगा॥

शागिर्द—जी नहीं किस लिये कि हुक्म का मानना तब दुरुस्त होता है जिस वक़्त हुक्म के मुवाफ़िक़ काम कियाजावे और मनअ़

किये काम को न करे सिर्फ़ इक़रार या इनकार ज़बानी को हुक्म मानना नहीं कहतेहैं ॥

उस्ताद—जो आदमी ज़बान से इक़रार या इनकार करके मुवाफ़िक़ उस के काम नहीं करते उनको सब क्या कहतेहैं और कैसा जानतेहैं ॥

शागिर्द—ऐसे लोगोंको सब झूठा कहतेहैं और बुरा जानते हैं और झूठ बड़ा ऐब और गुनाहहै ॥

शेअर ।

हक़ तआला पनाह में रक्खे ॥
शर्रे नफ़स और शर्रे शैतान्हैं ॥

दसवां सबक़ ।

रेल गाड़ी के बयान में ॥

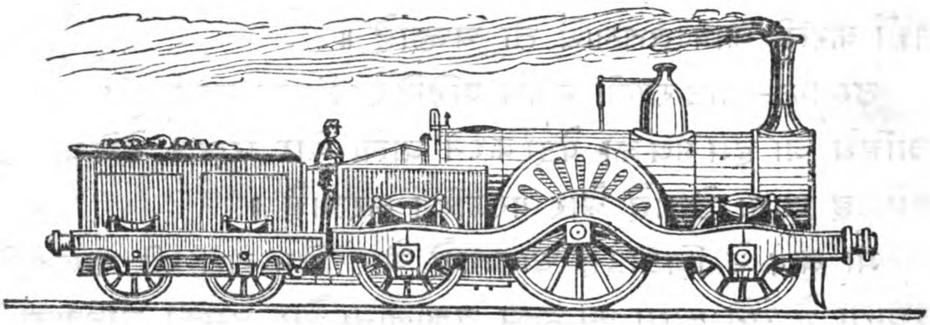

यह गाड़ी सिर्फ़ भाफ़ के ज़ोरसे लोहे की सड़क पर निहायत जल्द चलती है गाड़ी में भाफ़ जमअ की जातीहै और उस में एक कल ऐसी लगीहै जिसके सबबसे धीरा और तेज़ चलाना आदमी के इख़्तियार में है उस को ऐनजन कहते हैं वह सबसे आगे रहताहै बाक़ी सब गाड़ियां उसके पीछे एक बअद दूसरे के ज़ंजीरों से बंधी रहतीहैं यह गाड़ी एक मिनट में एक मैल चल सक्ती है मगर टूटने वग़ैरह के ख़ौफ़से दो मिनट में एक मैल लेजातेहैं इस के सबब से सौदागरी आसान होगईहै क्योंकि उन चीज़ोंको

जो एक मुल्क में बहुत पैदा होने के सबब से सस्ती और ख़राब रहती हैं और मुल्कों में जहां वे पैदा नहीं होतीं और महंगी बिकती हैं लेजाना बहुत आसान होगया है और इसी सौदागरी के ज़ियादह होनेके सबबसे और २ मुल्कों के सौदागरों से मुहब्बत और मेल ज़ियादह होगया है पहिले सौदागरों को ज़ियादह किराया देनेसे और हरतरह के राह वाले डरोंके सबबसे नफ़ा कम होताथा अब थोड़ी मिहनत से पहले से दूना नफ़ा पातेहैं दिनों की राह घंटोंमें काटते हैं सिवा इसके मज़दूरों वग़ैरह की कमाई भी ज़ियादह होतीहै मगर नादान लोग अक्सर दो ग़लतियां करके चोट खातेहैं अव्वल यह कि जब रेलगाड़ी चलती है उस वक़्त लोग सवार होने या उतरने का इरादह करतेहैं और अक्सर गिर कर तकलीफ़ उठाते हैं दूसरे गाड़ी को दूर समझके उसके आगे निकलने का इरादा करते हैं ऐसी सूरतों में अक्सर ना समझ मर जातेहैं—यह उमदह कल वाटसाहब बहादुर की निकाली हुईहै ॥

ग्यारहवां सबक़ ।

रबरके बयानमें ॥

हिन्दुस्तान में थोड़े अर्सेसे रबरका रिवाज हुआ है इसी से उसके असल बयान में फ़र्क़ होरहाहै असल में यह एक दरख़्तका गोंदहै कि मिस्ल पानीके निकल कर जमजाताहै फिर उसको साफ़ करके रबर बनालेते हैं पिनसिल के लिखे हुये हर्फ़ उसके रगड़ने सेमिट जाते हैं और काग़ज़ साफ़ होजाता है और कंघी अच्छी बनती हैं और फ़ीताभी निहायत उमदह बनताहै जो खींचने से बढ़जाताहै और छोड़ने से फिर सिमिट कर वैसाही होजाता है फ़रंगिस्तान के अक़्लमन्द लोग मोज़ों और दस्तानों के मुंहपर उसको लगाते हैं सिवा इसके औरभी बहुत काम आताहै हिन्दुस्तानियों ने बसबब नजानने के अभी इससे ज़ियादह फ़ायदह नहीं पाया है ॥

ज़ाहिर हो कि लूशायों के मुल्कमें जो आसाम के पूरब है रबर

बहुत होता है और वहां उसकी बड़ी सौदागरी शुरूअ हुईहै ॥

बारहवां सबक़ ।

भाफ़के जहाज़के बयानमें ॥

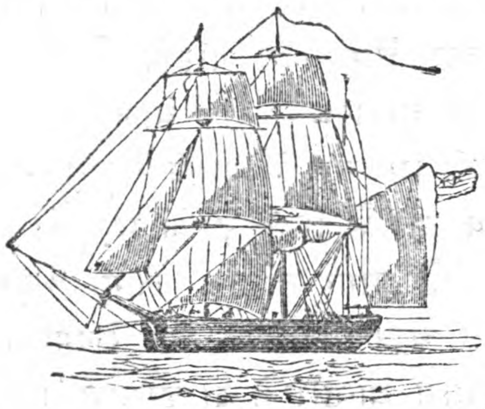

जिस तरह रेल गाड़ी भाफ़ के ज़ोर से खुश्की में चलती है उसी तरह यह भाफ़का जहाज़ जिसका नक़्शह ऊपर खिंचा है तरी में चलता है यह जहाज़ दो पहियों से कई कलोंके साथ चलता है और अक्सर पेंच से चलता है जो पतवार के नज़दीक और पानीके नीचे होता है और ये दोनों भाफ़ के ज़ोर से चलते हैं और तेज़ी और सुस्ती उनकी बिल्कुल आदमी के इख़्तियार में है इसमें हवाका मुवाफ़िक़ होना बिलकुल ज़रूर नहीं है और तूफ़ान का डरभी इसमें कम है इस के सबब से चीन व लंडन व बंगाला व सिलोन व मदरास व अदन व जद्दह व मिश्र व अरब व सिंध व किरांचीबंदर व ईरान वग़ैरह के आदमियों की आमदरफ़्त ज़ियादह होगईहै और सौदागरी का माल और ख़त व अख़बार वग़ैरह दूर दूर जल्द पहुंच जातेहैं तरीके मुसाफ़िरों को सफ़र बहुत आसान होगया है ॥

तेरहवां सबक़ ।

छोटी इलायची और जायफल के बयान में ॥

इलायची एक ख़ुश्बूदार उमदह चीज़है हिन्दुस्तानी लोग

इसके दाने पानमें खातेहैं और पुलाव और ज़रदह और कोरमे वग़ैरह उमदह खानोंमें ख़ुशबूके लिये डालते हैं और दवाओंमेंभी इस को खातेहैं मलाबार कोचीन मंगलोर और तमाम करनाटकइन गर्म मुल्कों में ख़ुद बख़ुद जंगलों में ज़ियादह पैदा होती है अक्सर लोग इलायची को शुरूअ बारिशमें दरख़्तों के नीचे एक ख़ास तरकीब से बोतेहैं पेड़ इसका क़रीब दो हाथके ऊंचा होताहै और इसके गुच्छे मूंगकी फलीके मिस्ल होतेहैं और पत्ते हल्दीके मानिन्द ज़रद होतेहैं उसकी जड़ें दूरतक ज़मीनमें भी फैलतीहैं उनमें सेभी गुच्छे पैदा होतेहैं इसलिये उसके खेतके चारों तरफ़ ज़मीन भी जुतीहुई और साफ़ रखते हैं अख़ीर जाड़ों में इसको तोड़ते हैं और उस जुती हुई ज़मीन से भी खोद कर गुच्छे निकालते हैं जौज़ यअनी जायफल जावा और बताबि या और पीनांग टापुओंमें पैदा होता है उसका पेड़ मौलसिरी फल अमरूद कासा होता है पकने से रंग ज़र्द हो जाता है और ख़ुद बख़ुद फट जाता है इसपर तीन तरहका छिलका होताहै ऊपरका एक अंगुलके दलका होता है उसको छीलकर दूसरा छिलका सुर्ख़ रंगका जिसे जाविची कहते हैं खुशबू दार होताहै उसको निकाल कर ख़ुश्क कर लेते हैं वहभी काम आताहै तब तीसरा छिलका छील कर जायफल निकालते हैं और खारी पानी में चूना मिलाकर उसमें भिगो कर ख़ुश्क करलेते हैं उसको सौदागर मुल्कों मुल्कों लेजाते हैं ॥

चौदहवां सबक़।

धातोंके बयानमें ॥

धातु ज़मीन से निकलती है मसलन् सोना, चांदी, तांबा, रांगा जस्त वग़ैरह इन सब में सोना वज़नी और क़ीमती है उस की खानें भी बनिस्बत लोहे वग़ैरह की खानों के कम हैं और निकलताभी थोड़ाहै अमीर लोगउसका ज़ेवर अपनी औरतेंको पहनाते

हैं जैसे कड़े छड़े छागल पाज़ेब कंगन वग़ैरह जो सुनार बनाते हैं सुनार लोग उसका तार सूत से बारीक खींचते हैं और वरक़ सोने का काग़ज़ से भी बारीक बनता है सोनेका मुलम्मअ भी चढ़-ता है इसके सिक्के को मुहर कहते हैं चांदी के सिक्के को रुपया अठन्नी चवन्नी दुअन्नी बोलते हैं और थाली रकाबी पानदान इच-दान कटोरे वग़ैरह बरतन इसके बनते हैं इस की खानें सोने से ज़ियादहहैं इससबब से उससे सस्ती बिकती हैं तांबा खाने पकाने या और कामों में लानेके लिये है इसके बर्त्तन देग देगची रकाबी कटोरे लोटे पानदान घड़े हुक्के वग़ैरह बनाये जाते हैं इस के सिक्के को पैसा कहते हैं ॥

पंद्रहवां सबक़।

धातोंकाबाक़ी बयान ॥

पीतल और फूल मिली हुई धातें हैं इनके भी बर्त्तन और ज़ेवर नासक और काशी और लखनऊ में अच्छे बनते हैं रांगा आग पर रखनेसेजल्द पिघल जाताहै क़लईगर इसका मुलम्मअ तांबे और पीतल के बर्त्तनों पर करते हैं अगर उनपर इसकी क़लई न होतो उनमें खट्टी चीज़ें बहुत जल्द कसाकर ज़हर हो जाती हैं कांसा और सीसा व जस्तके ज़ेवर पायल अनवट बिछुवे वग़ैरह भी कम क़ौम की औरतें पहनती हैं और जस्तके भी आबख़ोरे व कटो-रे व सुराही वग़ैरह बनते हैं सुराही में अमीर लोग पानी भरके बर्फ़ में झलवाते हैं तो बहुत जल्द सर्द होजाता है लोहा सबसे सस्ती चीज़है मगर सबसे ज़ियादह काम आता है क्योंकि तरह तरहके औज़ार जो किसान और बढ़ई और मेमारों के पास होते हैं और सब कलें और कुंडे और ज़ंजीर वग़ैरह इसी की बनतीहैं पेशेवर लोग इससे बहुत नफ़अ उठाते हैं पारा भी जो एक सफ़ेद रंग और बहने वाली चीज़ है खानसे निकलता है और आग की गर्मी सेउड़ जाताहै अगर उसको क़लई में मिलाकर आईना के एक

तरफ़ लगावें तो दूसरी तरफ़ सूरत मअ़लूम होने लगती है ज़ा-हिरहो कि आज कल कई नये क़िस्मकी धातें निकलीहैं इन में से प्लेटीनम् एल्यूमिनम् मशहूर हैं प्लेटीनम् का रंग सफ़ेद मिस्ल चांदी के होता है और यह धातु सबसे ज़ियादह सख़्त और भारी होती है और आग से भट्टी में नहीं पिघलती बल्कि बिजली की गर्मी या ग्यास की गर्मी से पिघलती है ॥

एल्यूमिनम् का रंग भी मिस्ल चांदी के सफ़ेद होता है आज कल उसके बनाने की तरकीब बहुत सहल होगई और कुछ तअ़-ज्जुब नहीं कि चन्दरोज़ में मकानात की तअ़मीर में लोहे की जगह यह काम आवे फिटकरी में एल्यूमिनम् बहुत होता है ॥

सोलहवां सबक़ ।

शक्ल ज़मीनकेबयानमें ॥

अय लड़को ज़मीन जो तुम देखतेहो गो देखने में चपटी मा-लूम होती है लेकिन वह दर असल चपटी नहींहै बल्कि गोल है क्योंकि ज़मीन का बहुत बड़ा गोलाहै और जब किसी बड़े गोलेका बहुत ही छोटा सा हिस्सह देखा जावे तो वह बज़ाहिर चपटा मअ़लूम होगा हालांकि दर हक़ीक़त उस में किसी क़दर गोलाई ज़रूर होगी और जोकि तुह्मारी नज़र ज़मीन के निहायत ही छोटे हिस्सेको एक मरतबे में देख सक्ती है इसलिये वह हिस्सह ख़्वाह मख़्वाह तुमको चपटा नज़र आताहै गो दर असलकिसी क़दर गोलाई ज़रूर रखता है इस ज़मीन का गोला जिस पर तुम बसते हो पानी और मिट्टीका बना है चुनांचिह उसकी सतह पर बअ़ज़ बअ़ज़ जगह चारों तरफ़ कोसों तक पानी देख पड़ताहै उसको समुद्र कहते हैं और बअ़ज़ बअ़ज़ मक़ाम पर कोसों तक ख़ुश्की है कि उस पर कहीं जंगल कहीं पहाड़ कहीं मैदान कहीं कहीं आबादियां हैं बअ़ज़ बअ़ज़ सैर करने वाले तरी व ख़ुश्की यअ़नी समुद्र और ख़ुश्क ज़मीनके कई तरफ़ोंमें होआये हैं और बहुत हाल उनका

दरियाफ़ किया है पस अब बख़ूबी साबित हो चुकाहै कि तमाम रूये ज़मीन पर दो तिहाई से ज़ियादह समुद्र यअनी तरीहै और एक तिहाई से कम खुश्की है ॥

सत्रहवां सबक़ ।

भाई बहिनकी बात चीत ॥

एक आदमी के एकबेटी और एक बेटा था हमेशह दोनों भाई बहिन अपने घरमें खेला करतेथे एक दिनभाई अपनी बहिनके पास खेलनेको आया बहिनने उसको देखतेही कहा भाई तुम मेरे पाससे दूरहो न मैं तुम्हारे साथ खेलूंगी और न तुम्हें अपने साथ खिलाऊंगी भाईने कहाकि बहिन मेरा क़ुसूर क्याहै कि तुम मुझसे ऐसी नाराज़ हो बहिनने कहा कि तुमने मेरा आईना कल मुझसे ज़बर दस्ती छीन कर तोड़ डाला और आज वह बात भूलगये अब मैं तुम्हें अपनी गुड़िया न दूंगी जो उसे भी तुम तोड़ डालो तो मैं तुम्हारा क्या करूंगी भाईने कहाकि बहिन मैंने जान बूझकर तुम्हारा आईना तो नहीं तोड़ा कांचकी ज़ात तो नाज़ुक मशहूर है हाथ से छूटकर गिर पड़ा और टूटगया गुड़िया तो चीथड़ों की बनी है वह किस तरह टूट जायगी मेरी अच्छी बहिन लाल गुड़िया मुझे देखने कोदे मैं अभी देखकर तुम्हे फेरदूंगा बहिनने कहाकि मेरी गुड़िया चीथड़ों की या किसीकीहै तुम्हारी बलासे मैं अपनी गुड़िया तुम्हें नहीं देती मेरा हाथ छोड़दो मुझसे शोख़ी न करो यहां से दूरहो मैं अभी अम्मा जानसे कह दूंगी कि मैं अपनी गुड़िया को कपड़े और गहना पहनातीहूं भाई मुझे खेलने नहींदेते भाई ने कहा जाओ तुमजो अपनी गुड़िया नहीं देती तो नहीं सही अपनी गुड़िया लिये बैठी रहो डेढ़ दमड़ी की गुड़िया की क्या हक़ीक़त है मेरे अब्बा जान ने एक अंगरेज़ी बाजा मुझे दियाहै वहऐसा अच्छाहै कितुम्हें ऐसा बाजा देखना कहां नसीबहै मैं ऐसी पचास गुड़िया उसपरसे सदक़ा करके फेंकदूं वह बाजा तुम्हें हरगिज़ न दिखाऊंगा वाह वाह क्या

अच्छा बाजाहै कि किसी के पास ऐसा न निकलेगा अपने दरवाज़े पर बैठ कर उसबाजे को बजाऊंगा वहां किसीको न आनेदूंगा ॥

बहिन ने कहाकि तुम बाजा बजाओ या जो चाहो करो मुझे तुम्हारा बाजा नहीं चाहिये मुझे यह डेढ़ दमड़ीकी गुड़िया बहुत है अजी तुम्हारा बाजा बड़ी क़ीमत का सही जिसकी तुम तअरीफ़ करते हो उसे मैं परसों देख चुकीहूं किसकाम का मुआ काला जैसे घुस, भाईने कहा कि तुमने मेरा बाजा कबदेखा जिस वक़्त मुझे अब्बा जानने दिया उसी वक़्त मैंने उसपर गिलाफ़ चढ़ाकर अलमारी मेंबंदकर दियाथा फ़क़तएक लहज़ेको अपने परोसी भाई क़ासिम के दिखानेको निकाला था उस वक़्त तुम अम्मा जान के साथ कहीं गईथीं बहिन ने कहा जिस दिन अब्बाजान वह बाजा लायेथे उसी दिन मैं देख चुकी अगर मुझे पसंद आता तो पहिले मैं लेलेती तुम्हें न मिलता मैंने अब्बा जानसे कहाकि बाजेसेज़ियादह मुझे गुड़िया अच्छी लगती है इसलिये वह गुड़िया मुझे देदो अबमैं अपनी गुड़िया की शादी करूंगी ॥

अठारहवां सबक़।

बाक़ी भाई बहिन की बात चीत ॥

जब भाई लालच देकर थकगया और बहिन किसी तरह साथ खेलने पर राज़ी न हुई तो लाचार होकर कहने लगा कि अच्छा बहिन जब तुम अपनी गुड़ियाका ब्याह करना हमें बुलाना हमभी आयेंगे और बाजाभी लायेंगे ख़ूबसा बाजा बजाकर तुम्हें ख़ुश करेंगे इस गुस्सह को दूर करेंगे बहिन ने कहाकि गुस्सह काहेका है भाई तुम खुशी से मेरे साथ खेला करो मगर जो बातमैं तुमसे कहूं उसेमान लिया करो और शोरभी न किया करो यह बातें अच्छी नहीं हैं जब तुम ज़रा२सी बात पर हठ करतेहो तो मेराजी तुम्हारे साथ खेलनेसे हट जाताहै भाईने कहाकि अच्छा आजसेमैं तुम्हारे कहने पर चलूंगा जोतुम कहोगी वही करूंगा मैं तुम्हारे आगे हाथ

जोड़ताहूं आईना टूटनेका हाल अम्मा जानसे न कहना नहींतो वे मुझे मारेंगी फिरमैं क्या करूंगा ॥

बहिन ने कहा कि भाई तुम डरो नहीं मारना कैसा मैं तुम पर ख़फ़गी तक न आनेदूंगी येसब बातें इन दोनोंकी मा एक कोने में खड़ी सुन रहीथी जब मिलाप होगया तो सामने आई दोनों को गोद में उठालिया और खूबसा प्यार करके कहाकि आईना टूटनेसे तुम न डरो मैं तुमसे खुशहूं कि आपसमें तुमने मेल कियाहै पस दूसरा आईना उससे भी अच्छा अभी मगांये देतीहूं तुम दोनों इसी तरह हमेशह हंसी ख़ुसी खेला करो और लड़ाई झगड़ा न किया करो मगर इस बातके सुनने से मुझको बेशक अफ़सोस हुआहै कि भाई ने मुझसे आईना टूटने का हाल छिपाना चाहा और बहिन भी वह न समझी कि झूठ बोलना क्या बुरा होताहै अगर तुम दोनों सहीह हाल फ़ौरन् मुझसे बतादेते और आईनेके टूट जानेपर सही अपनी शरमिंदगी ज़ाहिर करके मुआफ़ी मांगते तोमैं औरभी खुश होती ॥

उन्नीसवां सबक़।

रोटीके बयानमें

हिंदुस्तान में अक्सर गेहूं की रोटी खाते हैं और ग़रीब लोग **जुवार माश बाजरह** वग़ैरह की,गेहूंका आटा तीन क़िस्म का होता है (मैदा१रवा२आटा३) गेहूं की रोटी भी बहुत तरह से पकाई जाती हैं और उनके नाम भी अलग २ होतेहैं—जैसे मोटी **रोटी चपाती फुलका खमीरी मांडा गावज़बान गावदीदह शीरमाल बाकरखानी पूरी कचौरी** बेपानीकी रोटी सुहाल यह सब ख़ास कर हिंदुस्तानी लोग खातेहैं और अंगरेज़ लोग पाव रोटी डबल रोटी बिसकुट इन नामों की रोटियां खाते हैं बअ़ज़ टापुओं में अनाज नहीं पैदा होताहै जैसे टापू मलक्का में सिर्फ़ एक क़िस्म के दरख़्त की छाल को पीसकर आटा बनाते हैं और उसकी रोटी पकातेहैं वह सफ़ेद नर्म चिकनी

ओर मीठी होती है इसी तरह से उन टापुओं में जो स्थिर महासागरमें बिषुवत रेखाके क़रीबहैं एक क़िस्मकी खजूर के दरख़्त का गूदाहोता है जब वह नर्म और किसी क़दर नर्म होता है तो उसे किसी चलनी में छान कर रोटी पकातेहैं ओर इसी तरह से एक क़िस्म के दरख़्त रोटी भाड़ कहलाते हैं उन में चकोतरे के बराबर सेर दो सेर के भारी फल लगते हैं उन को तोड़ कर दो पत्थरों को आग में गर्म कर के फल उसमें दबाते हैं फिर किसी बरतन में भाड़ लेते हैं तो उसमें से उमदह सफ़ेद आटा गिरता है उस को कम पानी का छींटा देकर गूंध कर रोटी पकाते हैं बअ़ज़ बअ़ज़ मुल्क में ज़मीक़न्द की तरह एक चीज़ पैदा होती है उसीको उबाल कर आटा बना के रोटियां पकाते हैं वेभी बहुत नर्म और मीठी होती हैं उस चीज़ को कसाब कहते हैं ॥

बीसवां सबक़ ।

अकबर बादशाहके बयान में ॥

अकबर बादशाह हिन्दुस्तान के मुसल्मान बादशाहों में बड़ा नेक ओर आदिल था अक्सर रात भर न सोता था ओर इल्म का चर्चा रखता था मिहनती ऐसाथा कि एक दफ़अ़ अजमेर से आगरे तक एक सोदश कोस की राह बराबर चलागया उसके वक़्तमें अक्सर क़ानून की किताबें भी बनती थीं उन में से आईन अकबरी बहुत मशहूर है राजा विक्रमादित्य की तरह उस के दरबार में भी बड़े२ क़ाबिल जमअ़ रहतेथे उनमें राजा जयसिंह बहादुरी में ओर बीरबल बहादुरी ओर दिल्लगीमें ओर अबुल्फ़ज़ल चिट्ठीपत्री लिखने में ओर फ़ैज़ी फ़ैयाज़ी हिकमत में ओर उर्फ़ी शाइरी में मशहूर थे उसकी अ़क़्लमंदी की एक यह हिकायत मशहूरहै कि एकदिन उसकी बीबीने उससे कहाकि बीरबल वज़ीर का ओहदा मेरे भाई को दीजिये उसने जवाब दिया कि तुम्हारे भाई कोअगर्चिह इल्म बहुत है मगर यह काम न हो सकेगा ओरकारोबार सल्तनत में

बिगाड़ पड़ेगा बीबी ने जवाब दिया कि आप उसको वज़ीर बना कर देखलीजिये अगर काम न चले तो आपको इख़्तियार है ग़रज़ उन की ख़ातिर से उस ने अपने साले को ख़िलअत देकर वज़ीर बनाया दूसरे दिन दरबार में उसने पूछा कि इस वक़्त जो लोग यहां बैठेहैं उनके जीमें क्या बातहै उसने अर्ज़ किया हुज़ूर आलम किसीके दिलका हाल क्यों कर मअलूम होसक्ताहै यह जवाब सुनकर अकबर चुप होरहा और घरमें आकर अपने ख़ास महलसे कहा तुम्हारे भाई की अक़्लमंदी इस जवाब से खुलगई दूसरे दिन दरबार में बीरबल को बुलाकर उससे भी सवाल किया उसने फ़ौरन् जवाब दिया कि इसवक़्त सबके दिलों में यह बात है कि हुज़ूर की सल्तनत हमेशह क़ायम रहे अगर यक़ीन न हो तो दरियाफ़्त कर लीजिये पस ज़ाहिर था कि अगर लोगोंको ऐसा ख़ियाल भी न होता तो भी उसके ख़िलाफ़ कहनेकी जुरअत न करते ॥

इक्कीसवां सबक़।

घोड़ेके बयानमें ॥

यह तसवीर घोड़े की है यह सब जानवरों में ख़ूब सूरत होता है इसके सुमों में घिसजाने के डरसे नअल बांधे जाते हैं घोड़ों की बहुत क़ौमें हैं **अर्बी ताज़ी तर्की इराक़ी कच्छी बेलज़ कैप** और ब्रह्माका घोड़ा घोड़े के रंगोंकेये नामहैं सब्ज़ा कुम्मैत समंद सुरंग नुक़रह वग़ैरह इस जानवरको लगामके इशारेसे जिधर मोड़ते

हैं मुड़जाताहै हिन्दुस्तानी लोग उसकी पीठपर अरक़गीर और चार-जामा तंगसे खींच कर पूश्ची और दुमची लगाकर ज़ीनपोश और रक़ाबें डालकर लगाम देकर सवार होते हैं और अक़रब और अर-जल और सितारह पेशानी वग़ैरह घोड़ोंको मनहूस समझकर अ-पने पास नहीं रखते हैं और अंगरेज़ लोग किसी तरहके घोड़ोंको मनहूस नहीं जानते और उनपर सिर्फ़ अर्क़गीर और काठी तंगसे खींचकर लगाम देकर रक़ाबें डालकर सवार होते हैं यह जानवर गाड़ी में भी जोता जाता है और उसपर ग़ल्ला वग़ैरह की गोने भी लादी जाती हैं और फ़ौजके लोग उसपर सवार होकर लड़ाइयें में जाते हैं ऐसी फ़ौज को रिसालह कहते हैं हक़ीक़त में यहजा-नवर निहायत वफ़ादार होता है अरबके लोग उसको लड़के की तरह पालते हैं ॥

बाईसवां सबक़ ।

ऊंटके बयान में ॥

यह तसवीर ऊंटकी है इसके पैर टेढ़े पीठ कुबड़ी गर्दन लम्बी होती है ज़ाहिर में इसका डीलडौल निहायत ख़राब है मगर यह जानवर मिहनती और बड़े कामका है इसके पेटमें एक थैली पानीकी भरी हुई अलग रहती है जिसके सबबसे उसके दिलको ऐसी तरावट और ताक़त रहतीहै कि अरब के रेगिस्तानी जंगले

में जहां पानी नहीं मिलता है बोझ लादेहुये भूखा प्यासा मंज़िलों चलाजाता है और थकता नहीं इसी से अरब के लोग उसको बड़ी क़दर करते हैं सौदागर लोग व्यापार का माल लादेहुये हज़ारों ऊंट की क़तार सौसौ कोस के फ़ासले पर रात दिन लिये चले जाते हैं और फ़ौज के लोग उसपर तंबू औ ख़ुराक और पोशाक लादे फ़ौजके साथ रखतेहैं बअ़ज़े सांडिनी सवार एक दिनमें सौकोस की ख़बर लातेहैं ऐसी सांडिनी की हज़ारों रुपये क़ीमत होती है वह भी इसी क़ौम सेहै अक्सर उस की पीठपर कजावा रख कर असबाब लादते हैं और उसमें आदमी भी बैठतेहैं और यह भी काठी और ज़ीन पोश और रकाबों से मिस्ल घोड़े के सजाया जाता है और एक ऐसी बागडोर जिसे मोहार कहते हैं लगाम की तरह लिये रहते हैं ऊंटकी सूरत से इसको हक़ीर समझना नादानी की बात है बल्कि इस की अच्छी आदतों पर ख़ियाल करना चाहिये जैसे बअ़ज़ ख़ूब सूरत आदमी बद वज़ऊ निकलते हैं और बद शकल आदमी लईक़ होते हैं ऐसा ही हाल जानवरों का है आदमी को लाज़िम है कि सूरत को न ख़ियाल करे बल्कि आदत देखे ॥

तेईसवां सबक़ ।

रूयज़मीनकी ख़ुश्की व तरी के हिस्सोंके बयानमें ॥

तमाम रूय ज़मीन की सतह का हाल जानना इल्म जुग़राफ़ियह कहलाता है और जो लोग उसको अच्छी तरह जानतेहैं उन को जुग़राफ़ियह दां कहते हैं अगर तुम भी जुग़राफ़ियह दां होना चाहो तो उस को दिल लगा कर सीखो लेकिन जब कोई सबक़ इस इल्म का पढ़ो तो उस के साथ नक़्शह या गोला ज़मीन का नक़ली तुम्हारे रूबरू ज़रूर होना चाहिये मसलन् पिछिले सबक़ में कह आये हैं कि तमाम रूय ज़मीन पर ख़ुश्की एक तिहाई से कम और पानी दो तिहाई से ज़ियादह है अब अगर तुम्हारे आगे ज़मीन के गोले का नक़्शह या ख़ुद ज़मीनका

गोला नक़ली हो तो तुम खुद अपनी आंख से देख कर अपनी अं-दाज़ से दरियाफ़ कर लोगे कि दर हक़ीक़त तमाम रूये ज़मीन पर समुद्र खुश्की से बहुत ज़ियादह है यअ़नी दो तिहाई से ज़ियादह समुद्र है और एक तिहाई से कम खुश्की॥

जब भूगोल वा ज़मीन के गोले का नक़्शह काग़ज़ पर बनाते हैं तो निस्फ़ भूगोल की तसवीर दाहिनेतरफ़ और निस्फ़ भूगोल की बांये तरफ़ रखते हैं क्योंकि सारे भूगोल की तसवीर जो मिस्ल गेंदे के गोल है चपटे काग़ज़ पर सिवा इस सूरत के और किसी तौर बन नहीं सकती और नक़्शह में उत्तर इस लिये हमेशह ऊपर की तरफ़ रखते हैं कि नक़्शह लिखने वाले को हर दफ़अ़ यह नहीं बताना पड़े कि उत्तर नक़्शह में किसतरफ़ रक्खा है और जब उत्तर ऊपरकी तरफ़ हुवा तो ज़रूर दक्षिण नीचेकी तरफ़ और पूरब दाहिने तरफ़ और पश्चिम बायें तरफ़ होगा नक़्शह या भूगोल नक़लीमें खुश्की की और रंगत रखते हैं और तरी यअ़नी समुद्रकी और कुलतरी यअ़नी समुद्रको जोतमाम रूये ज़मीनके जुदे जुदे तरफ़ों मेंहैं वृहत महा सागर कहते हैं और पहिचान के वास्ते उसके पांच बड़े हिस्से किये हैं यअ़नी उत्तर महा सागर १ दक्षिण महा सागर २ आटलांटिक महासागर ३ स्थिरमहासागर ४ हिन्द का महासागर ५॥

इसी तरह तमाम खुश्की को ज़मीन कहते हैं और उस के भी पांच हिस्से कियेहैं यअ़नी एशिया १—यूरप२—आफ़्रिका३—अमे-रिका४—ओशनियां५ इन्हीं हिस्सों पर आदमी और जानवर सब रहते हैं और अपना कारोबार खेती व रियासत का उन्हीं पर रखते हैं ओशनियांमें बहुत से बड़े२और छोटे २ टापू हैं और बाक़ी चार हिस्सों से हर एक महाद्वीप बर्रे आज़म कहलाता है उस में बहुत से मुल्क हैं मसलन् एशिया में बारह मुल्कहैं यअ़नी उत्तर में रूस १ या सैबेरिया व तातार २ या तुर्किस्तान दक्षिण मे

ब्रह्मा ३ स्याम ४ हिन्दुस्तान ५ अरब ६ पूरबमें चीन ७ व सल्तनत जापान ८ के टापुओं की पश्चिममें टर्की या एशियाई रूम ९ और मध्य में अफ़ग़ानिस्तान १० ईरान ११ तिब्बत चीनीतातार॥

ज़मीन के बीचों बीच में जितने मुल्क पूरब और पश्चिम की तरफ़ हैं सूर्य्य उन की सीध पर है इसी से वहां बहुत गर्मी होती है और उत्तर दक्षिण की तरफ़ जितना दूर होते जाओगे उतनी सर्दी होती जायगी यहां तकक़ि निहायत दूर पर निहायत सर्दी होती है॥

ज़मीन सूर्य्य के गिर्द ३६५ दिन ६ घंटे में एक दफ़ा घूम जाती है वही साल कहाता है और २४ घंटोंमें अपनी धुरीके गिर्द फिर जाती है उस का रात दिन कहते हैं ग़रज़ ज़मीन हर वक़्त दो हर्कतों में रहती है जैसे लट्टू घुमाते हैं तो वह घूमता हुआ आगे को बढ़ता है वैसेही ज़मीन धुरी पर घूमती हुई सूर्य्य के गिर्द दौरा करती है॥

चौबीसवां सबक़।

हिन्दुस्तान की शक्ल और अर्ज़ व तूल के बयान में॥

जिस मुल्कमें तुम रहतेहो उसको हिंद या हिंदुस्तान कहतेहैं अगर उसकी शक्ल तुम नक़्शे पर देखो तो तुम को मअ़लूम होगा कि वह त्रिकोण की सूरत का है वह दर हक़ीक़त बहुत बड़ा मुल्क है और उसमें बड़े२पहाड़ और बड़े२ दरिया और बड़े बड़े सपाट मैदान आबाद व वीरान और बड़े२ जंगल हैं इस मुल्क का ज़ियादह से ज़ियादह लंबाव पंजाब की उत्तर हद से लेकर रास कुमारी तक लग भग अट्ठारह सौ मीलहै और चौड़ान भी निहायत दरजे यअ़नी क़िरांचीसे लेकर आसामकी पूरब हदतक क़रीब२ उसी क़दरहै अगर कोई शख़्स हिंदुस्तानके एक सिरेसे दूसरे तक सीधी राहसे सफ़र करना चाहे और ये मान लो कि फ़रज़न् पहाड़ और दरिया और जंगलजो बीचमेंहैं पार करता चलाजाय और हर रोज़

बीस मील बराबर चले तो तीन महीने पूरे उसको इस सफ़र में बीतेंगे अगर तुम नक़्शह एशियाको देखो तो तुमको मालूम होगा कि मुल्क हिंदुस्तान उसके दक्षिणमें है और इस मुल्कके उत्तर तरफ़ पहाड़ोंका बड़ा भारी सिलसिला है उनको पहाड़ हिमालय कहते हैं और ये तमाम दुनियां में सब पहाड़ोंसे ऊंचेहैं पश्चिमकी तरफ़ पहाड़ सुलेमानहै और पूर्वकी तरफ़ और पहाड़हैं लेकिन दक्षिणीहिस्सह समुद्र से जिसको हिन्द का महासागर कहते हैं घूमा हुआ है यअनी जो हिस्सह इस समुद्रका हिंदुस्तान के पूर्वहै उसको खाड़ी बंगाल और जो पश्चिम है उसको अरब का समुद्र कहतेहैं और कुलको हिन्दका समुद्र जो दूर तक दक्षिण की तरफ़ चला गयाहै पस मुल्क हिन्दुस्तानकी हदें ये हैं उत्तरमें हिमालय पहाड़ पूर्व में बअज़ पहाड़ और खाड़ी बंगालेकीहै और पश्चिममें पहाड़सुलेमान और अरब का समुद्र और दक्षिण में हिन्द का समुद्र॥

पच्चीसवां सबक़।

हिन्दुस्तानकी लंबाई चौड़ाई और आबादी के बयान में॥

हिन्दुस्तान की लम्बाई और चौड़ाई ऊपर लिखचुके हैं अब अगर तुम उसका रक़बह दरियाफ़्त करना चाहो तो मैं तुमको बताऊंगा लेकिन पहिले तुमको मअलूम करना चाहिये कि जिस तरह अर्ज़ व तूल का शुमार तूलानी गज़ और मेल वग़ैरहसे होताहै उसीतरह रक़बह का शुमार मुरब्बअ गज़ और मुरब्बअ मेल वग़ैरह से किया जाता है और तूलानी मेल और मुरब्बअ मेलमें यह फ़र्क़ है कि तूलानी मेल सिर्फ़ एक मेल के फ़ासिले या दूरीको कहते हैं और मुरब्बअ मेलसे एक मेल लंबे और एक मेल चौड़े बिस्तारसे मुरादहै पस अगर तुम हिन्दुस्तान के बिस्तार या उसके रक़बहको पूछोतो उसमें ऐसेपन्द्रह

लाख मुरब्बअ़ मैल से किसी क़दर ज़ियादह हैं और उनमें बाईस किरोड़के क़रीब मनुष्य आबाद हैं—सरकारी अमल्दारीके अलावह हिंदुस्तान में दोसौ के क़रीब छोटे बड़े राज्य और रियासतें हैं और कुछ थोड़ीसी अमल्दारी फ़रांसीसों और पोर्टगीजों की भी हैं ये सब मिलकर छः लाख मुरब्बअ़ मैलसे किसी क़दर ज़ियादह लंबाई चौड़ाई में हैं पस नौ लाख मुरब्बअ़ मैलसे किसी क़दर ज़ियादह सरकार अंगरेज़ी की अमल्दारी में हैं॥

छब्बीसवां सबक़ ।

हिन्दुस्तान के पहाड़ों के बयान में ॥

सिवा पहाड़ हिमालय जिसका ज़िक्र ऊपरहो चुकाहै हिंदुस्तान में पहाड़ोंके औरभी बड़े २ सिलसिलेहैं और उनमेंसे पहाड़ बिंध्याचल और पूरबी वा पश्चिमी घाट ख़ासर हैं और पहाड़ अरवली और नीलगिरी भी मशहूर पहाड़ हैं तुम जानते हो कि इस दुनिया के निहायत गर्म मुल्कोंसे अगर तुम उंचाई पर चढ़ो तो जिसक़दर ज़मीनसे ऊंचे होते जाओगे उसी क़दर ज़ियादह सर्दी मअ़लूम होती जायगी आख़िरश इसक़दर सर्दी होगी कि पानी वहां अपनी असली हालतमें नहीं रह सक्ता बल्कि कांचकी तरह जम जाताहै और बर्फ़ कहलाता है मेहभीवहां नहीं बरसताहै लेकिन सफ़ेद हलके परोंकी शक्ल के टुकड़े पानी के बदले गिरते हैं औरबर्फ़ बारां कहलातेहैं पहाड़ हिमालय इस क़दर ऊंचाहै कि ऊपरके हिस्से उसके जैसा तुम को अभीबताया गया है बर्फ़से हमेशह छिपेहुये रहतेहैं देव ढुंगा और कांचन चंगा उसकी निहायतऊंची चोटियां हैं इनसे ज़ियादह ऊंची कोई चोटी नहीं दरियाफ़्त हुई है ॥

सत्ताईसवां सबक़।

मगरके बयानमें॥

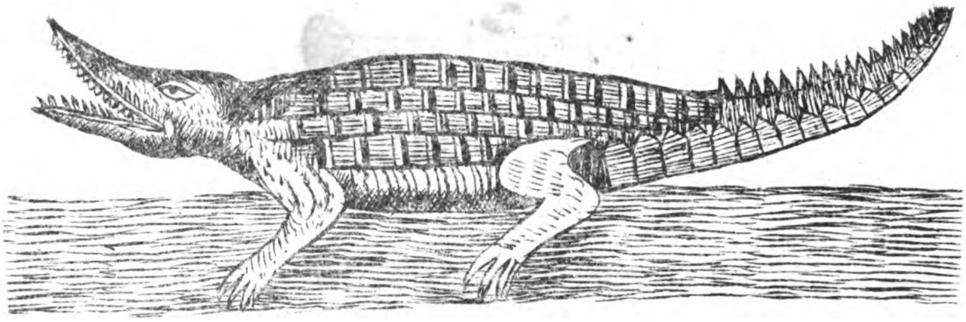

सबदरिन्दोंपरहैंक़ाबिज़हज़रतेइन्सांमगर ॥
जालमेंउनकेनहींफंसताहैहरगिज़यकमगर ॥

यह तसवीर मगरकीहै जो दरियायी जानवरों में सबसे ज़ियादह ख़ौफ़ नाक ओर भयानक है अक्सर तालाबों में भी नज़र आता है ओर कभी ख़ुशकी परभी चरने आता है सीसे की गोली अक्सर उस के बदन पर असर नहीं करती हैं क्योंकि इसके बदन पर मोटे छिलके होतेहैं वह तलवार से भी नहीं कटतेहैं इसका बदन दूरसे कछुये के मिस्ल नज़र आता है इसकी पीठ का रंग भूरा ओर पेट का पीला होता है इसका मुंह इतना लंबा होताहै कि एक बकरी का एक लुक़मा कर जाता है साठ दांत इस के होते हैं ओर दोनों अगले पंजोंमें पांच२उंगुलियां ओर पिछले पैरों में चार२ उंगुलियां होती हैं नाख़ून लंबे नोकदार ओर दुम भी लंबी ज़बरदस्त होती है यह जानवर सीधा ख़ूब दौड़ता है ओर घूमने में देर लगती है इस वास्ते जब यह किसी के पीछे दौड़े तो उसको मुनासिब है कि आड़ा तिर्छा चक्कर करता हुआ भागे ओर जब यह जानवर पकड़ लेता है तब किसी तरह से नहीं छोड़ता है सिवा इसके कि इसकी आंखों में उंगली की जावे-इसकी

मादा दरिया के किनारे ८० और १०० तक अंडे देती है और सिर्फ़ सूर्य्य की गर्मी से बच्चे निकलते हैं यह जानवर हिन्दुस्तान और मिसर और चीन वग़ैरह में अक्सर होता है ॥

अट्ठाईसवां सबक़ ।

सूर्य का बयान ॥

शाहख़ावरतख़्त गरदूं पर हुआ है जिलवहगर ॥
जराम खोलो ग़ाफ़िलो मसरूफ़ कारो बार हो ॥

सूर्य जिसकी रूह तसवीर है हर रोज़ पूरब की तरफ़ निकलता है निकलने के वक़्त सुर्ख़ रंगत होता है फिर जितना ऊंचा होता है उतनी ही और चमक ज़ियादह होजाती है थोड़े अर्से में इस से कोई आंख नहीं मिला सक्ता है अगर कोई इस को आंख भर के देखा करे तो आंखें चैंध्या जाती हैं मगर उक़ाब सूर्य की तरफ़ देख सक्ता है जब उस के निकलने का वक़्त क़रीब होताहै तो कुछ रोशनी फैलती है उसी को सुबह कहते और २४ घंटों

में यह सारी दुनिया के गिर्द घूम जाता है इसी से रात दिन पैदा होता है ज़मीन से यह बहुत दूर है हर क़िस्मके अनाज और फल वग़ैरह इसी की गरमी से पकते हैं और हैवानात के ख़ून में उस की गरमी से ताज़गी रहती है जब यह पूरब से पश्चिम को तरफ़ जाकर डूब जाता है तो रात होजाती है तब सब आदमी और बअ़ज़ हैवान सो रहतेहैं मगर उल्लू और चिम गट्टड़ उड़ा करते हैं और शेर वग़ैरह जंगलों में फिरा करते हैं डूबनेके वक़्त इस का रंग सुर्ख़ दिखलाई देता है॥

उन्तीसवां सबक़।

दियानत दारीके बयान में॥

एक मज़दूर ने एक थैली राह में पड़ी पाई उस में दो सौ रुपये थे मज़दूर ने यह ख़याल किया कि अगर मैं इन को ख़र्च करूंगा तो थोड़े दिनों में ख़र्च होजावेंगे और उसके मालिक का क़र्ज़ मुझपर रहेगा उस के मालिक की तलाश ख़ुद करने लगा और अपने दोस्त आशना से भी उसका हाल बयान किया और मालिक की तलाश के वास्ते कह दिया मगर थैली का बिलकुल हाल इस लिये न बताया कि शायद कोई बेईमान कहने लगे कि मेरी है और सब पता जो उस ने सुन लिया हो बयान करदे आख़िर कुछ दिनों में उस के मालिक को यह ख़बर पहुंची मज़दूर के पास आया और उस से पूछा मज़दूर ने इक़रार किया उस ने थैली का निशान पूछा उस ने सब ठीक २ निशान थैली और मक़ाम गिरने और सिक्कह रुपयों का बतला दिया तब मज़दूर ने वह थैली उस को देकर रुपये गिनवा दिये मालिक उसकी ईमान दारी से बहुत ख़ुश हुआ और बीस रुपये निकाल कर मज़दूर के आगे रखदिये और कहा जिस तरह आपने थैली देकर मुझको इहसान मंद कियाहै उसी तरह इन रुपयोंको लेकर इहसान मंद कीजिये मज़दूर ने इनकार किया और कहा कि

जिस तरह आपने थैली लेकर मेरा बोझा उतार लिया वैसाही इस इहसान से भी मुआफ़ कीजिये मगर मालिक ने हरगिज़ न माना और कहा कि अगर आप कुछ न लेंगे तो मैं थैली भी न लूंगा और थैली मज़दूर के सामने रखदी तब लाचार होकर मज़दूरने सिर्फ़ पांच रुपये निकाल लिये देखो उस ईमानदारी की बदौलत मज़दूरका नाम आजतक चला जाताहै॥

तीसवां सबक़।

सूबे अवध के बयान में॥

सूबा अवध मुल्क हिन्दुस्तानमें नैपाल और दरिया गंगके दरमियान मेंहै हिंदुओं के राज्यमें इसकी राजधानी अयोध्या या अवध पुरी थी हिंदू अबतक उसको अपना देवस्थान जानते हैं क्योंकि राजा रामचन्द्रजी यहां पैदा हुयेथे और उनका तख्तगाह यही है अयोध्या से पश्चिम तरफ़ तीन कोस पर फ़ैज़ाबाद है जिस्को बंगला भी कहते हैं इसको नव्वाब अबुल् मन्सूरख़ां सफ़दर जंग बहादुरने बसाया था पहले अवध के हाकिम उसी में रहतेथे नव्वाब शुजाअ उद्दौला बहादुर ने इसको ख़ूब आबाद किया उनका मक़बरह भी उसी में है नव्वाब आसफ़ुद्दौलह बहादुर के वक़्तसे यहां के हाकिमों ने लखनऊ में रहना पसंद किया इसमुल्क के शहरों से फ़ैज़ाबाद और लखनऊ इस वास्ते मशहूर है कि वहां क़ाबिल हुनर मंद लोग रहते हैं और बहिराइच सय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ीके दफ़न होनेसे मशहूर है क़सबों में **बिलग्राम अमेठी काकोरी रदौली पिहानी गोपामऊ और दूर** वग़ैरह हुनरमंद और अमीर लोगोंसे मशहूर हैं अवध में चौबीस हज़ार मील मुरब्बअ ज़मीन और एक किरोड़ तीस लाख आदमियों की आबादी है ब्राह्मण बहुत हैं राजपूत कम, दरिया इस मुल्कमें ये हैं **घाघरा सरयू कल्यानी गोमती टेढ़ी** वग़ैरह ज़मीन यहां की बरा बर है कोई पहाड़ नहीं है अनाज

हर क़िस्म का पैदा होताहै और मुल्कों से यह मुल्क बहुत पैदावार है मगर रुई कम पैदा होती है यमुना के क़रीबके मुल्कोंसे बहुत आतीहै अब पोस्त भी ज़ियादह बोया जाताहै और ख़ास शहर लखनऊ में अफ़यून का बहुत ख़र्चहै बैसवाड़े के लोग और मक़ामोंसे ज़ियादह बहादुर और क़द्दावर होतेहैं सन् १८५६ ई० से यह मुल्क सरकार अंगरेज़ीके क़ब्ज़ेमें है इस मुल्कके चार हिस्से किये गयेहैं और हर हिस्सेमें तीन २ ज़िलअ़ हैं वे नीचे लिखेहैं ॥

नामक़िस्मत	नामज़िलाओंके
लखनऊ	लखनऊ—उन्नाम—बारहबंकी ॥
रायबरेली या बैसवाड़ा	रायबरेली—परतापगढ़—सुल्तांपुर ॥
फ़ैज़ाबाद	फ़ैज़ाबाद—गोंडा—बहरायच ॥
सीतापुर	सीतापुर—हरदोई—खीरी ॥

अब इस मुल्क के हाकिम आला जनाब साहब चीफ़ कमिश्नर बहादुर हैं उनके एक मददगार हैं यअ़नी जनाब साहब जुडीशल कमिश्नर बहादुर जिन के इजलास में फ़ौजदारी और दीवानी के मुक़द्दमे फ़ैसल होते हैं हर एक क़िस्मत में एक २ साहब कमिश्नर बहादुर मुक़र्रर हैं जिनके सामने बड़े २ मुक़द्दमे माल दीवानी फ़ौजदारी के पेश होतेहैं और उनके नीचे हरएक ज़िलअ़ में एक एक साहब डिपुटी कमिश्नर बहादुर हैं और हर साहब डिपुट कमिश्नर बहादुर की मददगारी में असिस्टण्ट कमिश्नर बहादुर और एक्स्ट्रा असिस्टंट कमिश्नर बहादुर और तहसील दार वग़ैरह रहतेहैं ॥

इकतीसवां सबक़ ।

दारचीनी और लौंगके बयान में ॥

दारचीनी एक ख़ुशबू दार चीज़है जो गर्ममसाले और दवाओं में पड़ती है उसका अरक़ और तेल बाई वग़ैरह को मुफ़ीद है

टापू सीलोन में जिसको अरब सरंद्वीप और हिंदू लंका कहते हैं बहुत हैं और अक्सर बाग़ों में बोई जाती है जब उसका दरख़्त तीन बरस का हो जाताहै तब उसकी शाख़ोंमें जो अक्सर सीधी होती हैं चाकूसे ख़त खींच देतेहैं जबवह ख़ुश्क होजातीहै तबउस को अलगकर लेते हैं उसके फल और जड़काभी तेल खींचाजाता है वहभी ख़ुशबूदार और जमा हुआ होता है आगे उसकी बत्तियां बनती थीं जब टापू सीलोन में क़ौम डचकी अमलदारी थी तब तक बे उनकी इजाज़त के कोई उसकी सौदागरी न कर सकता था और न कोई बोने पाता था इस सबब से बहुत महंगी थी जब सरकार अंगरेज़ी की अमल दारी हुई तबसे सबको सौदागरी और बोनेका इख़्त्यारहै लौंग टापू मलाकामें पैदा होतीहै डच लोगों ने जो पहिले यहांके बादशाह थे उसके दरख़्त फ्रांस और बोर्नियो और दक्षिणी आफ़्रिकामें भी लगाये अब वहां भी पैदा होतीहै उसकी ख़ासियत गर्म है इसीसे उसका तेल और अरक़ अक्सर सर्द बीमारियोंको फ़ायदह करताहै आगे यह बहुत महंगी थी अब सस्तीहै॥

बत्तीसवां सबक़।

संज्ञा के कारकों के बयान में॥

संज्ञा के पांच कारक होतेहैं कर्त्ता, फ़ायल, कर्म, मफ़ऊल, अपादान, जार, संबन्ध, इज़ाफ़त, सम्बोधन, निदा, जैसा यह बाग़ अच्छा है, इस बाग़ ने मुझ को ख़ुश किया, इस बाग़ को बेच डालो, इस बाग़ में सब मेवेहैं, अय बाग़, यह बाग़ ज़ैद का है, इस बाग़ से चलो, यह बाग़ ख़ूब बहार पर है, इस बाग़ का कौन मालिक है इस बाग़ के दरख़्त कटगये, इस बाग़की सैरकरो, इस बाग़ के नीचे किसकी ज़मीन है, इस बाग़ की तरफ़ आबादी कमहै, यह गाड़ी वलायती है, इस गाड़ी ने मुझ को तकलीफ़दी, इसगाड़ी को तुम ने ख़राब किया, तुम्हारी गाड़ी में कौनहै, इस गाड़ी से सन्दूक़ चह

निकाललो, हमारी गाड़ीपर बैठलो,इस गाड़ीका पहिया टूटा है,गाड़ीकी सड़क बनीहै, इस गाड़ी के पहिये छोटे हैं, गाड़ी के नीचेसे हटो, गाड़ी की तरफ़ न जाओ,यह मकतब बड़ा है,इस मकतब ने बहुत फ़ायदा पहुंचाया है,इस मकतब में जाताहूं, इस मकतब में लड़के कम हैं, मकतब से आताहूं,तुम्हारा मकतब रौनक़ परहै,हमारे मकतब का ख़र्च बड़ाहै, इस मकतब की तअ़लीम अच्छी है, ये तुह्मारे मकतब के लड़के हैं, हमारे मकतब के नीचे बाग़है, अपने मकतब की तरफ़चलो, यह गाय दुधेल है, गायने कुछ नहीं खाया,अपनी गायको बेचोगे, इस गाय में बुरी आ़दत है,गाय से बच्चह अलग करलो,गाय पर मिट्टी न डालो, इस गाय का बच्चह कहांहै, इस गाय की क्या क़ीमत है,इस गाय के बड़े दामहैं, गाय के नीचे साफ़ करदो, इस गायकी तरफ़ न जाओ॥

तेंतीसवां सबक़।

कांचके बयान में॥

कांच के गिलास झावे हांडियां मिरदंगी चूड़ियां अचारियां कवल झाड़ फ़ानूसे कुमकुमे आईने थालियां हुक़्क़े वग़ैरह बनते हैं उमदह क़िस्म की कांच बासठ हिस्से चक़माक़ पत्थर या रेत बाईस हिस्से सज्जी तेरह हिस्से अल्युमिनम मिलाकर घरिया में रखकर तेज आंच में गलाकर बनाते हैं ऐनकें और दूरबीनें वग़ैरह जो देखने के आले हैं कांचके बनते हैं सिवा इन चीज़ों के सेंदूर और तरह तरह की धातें डाली जाती हैं रंगदार शीशे असली जवाहिरके मिस्ल बन जाते हैं बअ़ज़ ऐबों के रहजानेसे नक़ली जवाहर कहलाते हैं शीशे के बरतनों में जो चीज़ रक्खी जाती है वह बिगड़ती नहीं है इस मुल्कमें इन बरतनों का रिवाज कमहै मगर इंगलिस्तान में अक्सर इसके बरतन होते हैं शीशे अक्सर दरवाज़ों में भी लगाये जाते हैं शीशेके एक तरफ़ पारा और क़लई मल ने से उसमें हर चीज़ का अक्स नज़र आता है बअ़ज़ लोग का-

ग़ज़ पर रंगीन तसवीर खींच कर उसपर शीशा लगाते हैं तो वह तसवीर शीशे पर खिंची हुई मअ़लूम होती है जिस मकान के चारों तरफ़ दीवारों और छत पर आईनह लगे होते हैं उसे शीश महल कहते हैं आईनह बहुत नाज़ुक होताहै गिरनेसे फ़ौरन् टूट जाता है फिर जुड़ता नहीं है अय लड़को याद रक्खो आबरू शीशे से भी नाज़ुकहै जिस तरह शीशा एक दफ़अ़ टूटकर नहीं जुड़ता है उसी तरह अगर आबरूके आईनहमें बाल पड़ा तो वह मिटाने से नहीं मिटता है इसलिये चाहिये कि बद काम और बद सुहबत से बचे रहो कि तुम्हारी इज्ज़तके आईनहमें बाल न पड़े॥

चौंतीसवां सबक़।

अवधके हाकिमोंकेबयानमें॥

पहले मुल्क अवध सल्तनत देहली का सूबा था वहां के बादशाह की तरफ़ से एक सूबेदार हाकिम यहां रहताथा वह जमअ़ ख़र्च इस मुल्क का बादशाह देहली के पास भेजा करता था महम्मदशाह बादशाह देहली के वक़्त में यहांकी हुकूमत बुरहान उल् मुल्क नव्वाब सआ़दतख़ां को मिली उनके कोई बेटा न था इसलिये उनके बअ़द उनके दामाद और भतीजे और शाह देहली के तोपख़ाने के सरदार यअ़नी नव्वाब अबुल मनसूरख़ां सफ़दर जंग गद्दी पर बैठे उनके बअ़द नव्वाब शुजाअ़उद्दौलह बहादुर उन के बेटे गद्दी पर बैठे उन्होंने फ़ैज़ाबाद को आबाद किया और उस में बहुतसे बाग़ और इमारतें बनाईं उनके बअ़द उनके बेटे नव्वाब आसफ़ुद्दौलह हाकिम हुये जो निहायत रहम दिल थे उनके वक़्तमें एक साल काल पड़ाथा उस साल उन्होंने एक इमाम बाड़े की तअ़मीर शुरूअ़ करदी जो अब तक लखनऊ में मौजूद है उससे ज़ियादहतर यह ग़रज़ थी कि मज़दूरी के बहाने से रिआ़या की जान बचे और इस क़दर रुपया इस तअ़मीर में ख़र्च किया कि रिआ़या को काल मअ़लूम न हुआ उनकी सख़ावत ऐसी मशहूर

है कि लखनऊ के दूकानदार अब तक उन का नाम लेकर दूकान खोलतेहैं और बअज़ जाहिल उनकी क़ब्र पर चढ़ावा चढ़ाकर मुरादें भी मांगतेहैं जिस कोठी में मारटीनिअर कालिज है उसको जनरल मारटीनिअर साहब बहादुर ने उन्हीं के वक़्त में बनाया था राजा झाऊलाल और टिकयतरायने भी उनके वक़्त में बहुत इमारतें बनाईं नव्वाब आसफ़ुद्दौलह बे औलाद मरे और उनके बअद मिरज़ा अली उर्फ़ वज़ीर अली कि उनका बेटा मशहूर था गद्दीपर बैठा लेकिन चन्दरोज़ के बअद सर्कार कंपनी बहादुर ने उसे गद्दीपर से उतारकर उसके चचा नव्वाब सआदत अलीख़ांको तख़्त पर बिठलाया जैसा अदल और इन्साफ़ इन्होंने किया वैसा अवधके किसी हाकिम ने नहीं किया और ऐसी किफ़ायतसे रुपया ख़र्च किया कि सत्तह किरोड़ रुपया जमअ करके मरे ॥

पैंतीसवां सबक़ ।

सल्तनत अवध के बयान में ॥

ग़ाज़ी उद्दीन हैदर नव्वाब सआदत अलीख़ां के मंझिले बेटे को साहबान अंगरेज़ बहादुर ने इस मुल्क का बादशाह बनाया और उनके नाम का सिक्कह भी जारी किया यह बादशाह अपने मुल्क से ग़ाफ़िल थे तेरह बरस सल्तनत करके सन् १८२७ ई० में मरे बअद उनके उसके बेटे नसीरुद्दीन हैदर तख़्त पर बैठे ये भी मुल्क से ग़ाफ़िल रहे और अपने दादा के वक़्त का रुपया सब बेहूदह ख़र्च कर डाला और अपने मरने के क़रीब साहब रेज़ीडेंट बहादुर को लिख भेजा कि मेरे कोई औलाद नहीं है मेरे बअद आप जिस को चाहें बादशाह बनावें साहब ममदूह ने उसी ज़माने में तहक़ीक़ात करके उनके चचा महम्मद अली शाह की निसबत नव्वाब गवर्नर जनरल बहादुर से इजाज़त मंगवाई मगर बअद मरने नसीरुद्दीन हैदर के उन की बेगम ने मुन्नाजान को जिसे बेटा बनाया था तख़्त पर बिठला

दिया जोकि यह काम साहब रेज़ीडेंट बहादुर के ख़िलाफ़ किया इसी सबब से साहब ममदूह ने इस ख़बर को सुनते ही थोड़ी फ़ौज ले जाकर उस के तख़्त गाह को घेर लिया और यह हुक्म सुनाने को कि मुन्नाजान तख़्त छोड़ दें अब्दुल रहमानख़ां क़ंधारी को मुन्नाजान के पास भेजा जब उस को आने में देर हुई तो साहब रेज़ीडेंट ने यह ख़ियाल करके कि शायद उसको क़ैद कर लिया या मारडाला तोप ख़ाना फ़ेर करादिया मगर अब्दुल रहमानख़ां फिर चुका था इत्तिफ़ाक़ से पहिला गोला दरवाज़े के पास उसीके लगा फिर और बहुत से आदमी भी मारे गये बाक़ी फ़ौज मुन्नाजान की भाग निकली तब साहब बहादुरने मुन्नाजान और बेगम को क़ैद करके कानपुर की तरफ़ से चिनारगढ़में भेज दिया उसकी औलाद अबतक वहां मौजूद है ॥

छत्तीसवां सबक़ ।

महम्मद अलीशाह के बयान में ॥

मुन्नाजान के बअद महम्मद अली शाह तख़्त पर बैठे ये बादशाह बूढ़े और अंधे थे मगर मुल्क के इन्तिज़ाम पर ज़ियादह ख़ियाल था उन्हों ने अक्सर इमारतें लखनऊ में बनाईं हुसेनाबाद में इमाम बाड़ा अब तक मौजूद है उस के क़रीब एक जामअ मसजिद की बुनियाद डाली थी लेकिन तमाम न हुई नहीं तो निहायत उम्दह मसजिद होती लोहे का पुल बनाने के लिये सब सामान जमअ किया था वह पुल उन के मरने के बअद तैयार हुआ और बहुत सा रुपया ख़ज़ानह अंगरेज़ी में जमअ करके वसीक़ह हासिल किया था उस के हासिलातसे अब तक मुहताजों और ग़रीबों की परवरिश होती है और हज़ारहा ग़रीबों को जड़ावल मिला करती है यह बादशाह पांच वर्ष बादशाहत करके सन् १८४२ ई० में मरगये तब उनके मंझिले बेटे अमजद अली शाह तख़्त पर बैठे ये ऐसे मज़हब के बड़े पाबंद थे कि

मुल्क अवध के बादशाहों में कोई न हुआ था मगर मुल्क का खूब इन्तिज़ाम न होसका पांच बर्ष बादशाहत करके सन् १८४७ ई० में मरे और जब वे मरे हैं तो कुल ३५ लाख रुपया ख़ज़ाने में रह गया था फिर वाजिद अली शाह उनके बेटे बादशाह हुए उन्हों ने पहिले पहल मुल्क पर अच्छा ख़ियाल किया मगर आख़िर को मुल्क में बड़ी बद इन्तिज़ामी और अबतरी हो गई जिस के सबब से सन् १८५६ ई० में मुल्क उनके क़ब्ज़े से निकल कर सरकार अंगरेज़ी के क़ब्ज़े में आगया अब ये बादशाह कलकत्ते में हैं और लाख रुपया माहवारी पेन्सन अंगरेज़ी सरकार से पाते हैं ॥

सैंतीसवां सबक़।

किसी राजपूतनी की बहादुरी के बयान में॥

कहते हैं कि एक औरत मुल्क राज पूताना के किसी गांव में रहती थी और उसके ख़ाविंद ने गांव के नज़दीक कहीं खेती की थी और दिन को वहीं रहा करता था एक रोज़ वह औरत अपने ख़ाविंद के लिये रोटी लिये जातीथी कि इत्तिफ़ाक़न रास्ते में जंगल से एक रीछ निकला और उसकी तरफ़ बढ़कर उसपर हमला

किया वह औरत रोटी फेंककर दरख़्त की आड़ में छिपगई और रीछ उसके पीछे दौड़ा उसने दरख़्त के आस पास घूमना शुरुअ किया और रीछ भी उसके पीछे रहा आख़िर रीछ ने अपने दोनों हाथ दरख़्त के गिर्द औरत के पकड़ने के फैलाये औरत ने यह समझ कर कि रीछ की गरदन छोटी है और मेरे और उसके बीचमें दरख़्त है उसके हाथ पकड़ लिये रीछ ने हज़ार चाहा कि अपने हाथ छुड़ा ले और उसे काटे लेकिन गरदनके छोटे होनेसे कुछ न होसका इस दरमियान में एक सिपाही उधर से निकला उस औरत ने बहुत नर्म आवाज़ से उसे पुकारा कि अय मियां सिपाही ज़रा यहां आकर इस दुःख दाईके हाथ तो पकड़ लो कि मैं अपने मियां का खाना दे आऊं सिपाही उस औरत की नर्म आवाज़ से समझा कि यह काम कुछ मुशकिल नहीं है और उसने रीछ के दोनों हाथ दरख़्त के उधर से पकड़ के औरत से कहा कि ले अब तुम जाओ अभी वह कुछ दूर न गई थी कि सिपाहीने पुकारा साहब इधर आओ यहकाम तुम्हारा मुझसे न होगा अपना ख़ुद काम तमाम होता है औरत ने कहा मियां ज़रा ठहर जाओ मैं अभी आती हूं पस वह अपने ख़ाविन्द पास खाना ले गई और उससे यह सारा हाल बयान किया उसका ख़ाविन्द कुल्हाड़ी लेकर उस मुक़ाम पर आया और रीछके शिर पर एक चोट ऐसी मारी कि वह बेहोश होकर गिरपड़ा और सिपाही की जान बची ॥

अड़तीसवां सबक़ ।

हिंदुस्तानके दरियाओंके बयान में ॥

इन्हीं बर्फ़ के ढके हुये पहाड़ोंसे जिनका ज़िक्र ऊपर होचुका है हिंदुस्तानमें तीन बड़े २ दरिया निकलतेहैं यअ़नी सिन्ध नदी गंग या गंगा नदी और ब्रह्मपुत्र नदी सिन्ध और ब्रह्मपुत्र दरिया पहाड़ हिमालय के उत्तरीय तरफ़ से निकलते हैं और गंगा दक्षिणीय तरफ़ से और पहिला उनमें से अरबके समुद्रमें गिरता

है और दूसरा तीसरा बंगाले की खाड़ीमें इन तीनों दरियाओं में और बड़े २ दरिया मिल जाते हैं जैसे सिंधमें झेलम और सतलज और गंगामें यमुना और यमुना में चम्बल सिवा इन दरियाओं के गोदावरी और कृष्णा और कावेरी पूरबकी तरफ़ बहकर बंगालेकी खाड़ीमें गिरती है और ताप्ती और नर्मदा पश्चिमकी तरफ़ बहकर खाड़ी अरबमें जा मिलते हैं ये पिछले पांचों दरिया गरमीकी ऋतु में क़रीब सूखनेके हो जाते हैं लेकिन उन तीनों दरियाओंमें जो पहाड़ हिमालय से निकलते हैं उस मौसिममें वे बनिस्बत और मौसिमोंके ज़ियादह पानी होजाता है और सबब उसका यह है कि उस वक़्तमें उन पहाड़ोंके तरफ़ों में जो बरफ़ जमअ होती है वह पिघलती है और पानी जो इस तरह पैदा होता है इन दरियाओंमें आकर बड़े ज़ोर शोरसे गिरताहै और बअज़ मुक़ामों पर तमाम उस इलाक़ह को जिस में होकर वे दरिया बहते हैं घेर लेता है ॥

हिंदुस्तान के सब दरियाओं में दरिया गंगा ज़ियादह मुफ़ीदहै वह इस मुल्क के निहायत आबाद हिस्सों में होकर गुज़रता है उसके किनारों पर या उसके नज़दीक सैकड़ों बड़े २ शहर आबाद हैं इस दरिया में हज़ारों बड़ी २ नावों और धुयें के जहाज़ोंकी भी बराबर आमदोरफ़्त रहती है ॥

उन्तालीसवां सबक़।

हिन्दुस्तान के बड़े २ हिस्सों के बयान में ॥

हम पहले बयान करचुकेहैं कि हिन्दुस्तान बहुत बड़ा मुल्कहै लेकिन हमारी राय में उस को एक मुल्क कहने के एवज़ अगर यह कहें कि उस में बहुत से मुल्क हैं और वे सब मिलकर हिन्दुस्तान कहलाते हैं तो यह क़ौल हमारी राय में दुरुस्त है और अब हिन्दुस्तान के ख़ास २ हिस्सों की यह तफ़सील है ॥

नं०	हिस्सों के नाम	हकूमतकी जगह	सब से बड़ा हाकिम	कैफ़ियत
१	पूरब में हातामदरास	राजधानीशहरमदरास	नव्वाबगवर्न्नरबहादुर	
२	नव्वाबनिज़ामुलमुल्कका राज्यहाते मदरास के उत्तर तरफ़ है	शहरहैदराबाद	नव्वाबनिज़ामुलमुल्क बहादुर	
३	दक्षिणमेंहाताबंबई	राजधानीशहर बंबई	नव्वाबगवर्न्नरबहादुर	
४	मध्यदेशीयसूबे	राजधानीशहरनागपूर	साहबचीफ़ कमिश्नर बहादुर	
५	पूरबी सूबे हाता बंगाल के	राजधानी शहरकलकत्ता	नव्वाब लफ़्टिनेंट गवर्न्नरबहादुर	
६	आसाम में पहाड़ीदेश जोउसके दक्षिण मेंहैं	राजधानीशहरकामरूप	साहब चीफ़कमिश्नर बहादुर	
७	पश्चिमी व उत्तरीय सूबेहाते बंगाल के	राजधानी शहर इलाहाबाद	नव्वाबलफ़्टिनेंट गवर्न्नर बहादुर	ये दोनोंहिस्से १ अप्रिल सन्१८७७ई० से शामिल होगये
८	सूबे अवध	राजधानी शहर लखनऊ	साहब चीफ़कमिश्नर बहादुर	
९	पंजाब	राजधानीशहरलाहौर	नव्वाब लफ़्टिनेंट गवर्न्नर बहादुर	
१०	राज कश्मीर	राजधानीशहरश्रीनगर	महाराजा कश्मीर	
११	नैपाल	राजधानी शहर काठमांडू	महाराजा नैपाल	
१२	भूटान	राजधानी शहर ताशीसूदन	धर्मराज व द्वीप राज	
१३	राजपूताना	राजधानीशहरअजमेर	साहब पोलेटीकल एजंट बहादुर	
१४	संधियाका राज्य	राजधानी शहर ग्वालियर	महाराजा संधिया	
१५	हुल्करका राज्य	राजधानी शहरइन्दौर	महाराजा हुल्कर	

सिवाय रियासत नम्बर २ के पहिले ६ हिस्से सरकारी अमलदारी में हैं और बाक़ी हिस्से बहुतसी छोटी २ रिसायतोंके समेत जैसा कि ट्रावनकोर हिंदुस्तान के दक्षिण में है हिंदू राजाओं और नव्वाबों के क़ब्ज़े में हैं रिसायत नव्वाब निज़ामुल्मुल्क के बुनियाद डालने वाले नव्वाब आसफ़जाह निज़ामुल्मुल्क वज़ीर शाह देहली के थे इसलिये अबतक वह रिसायत उनके नामसे रियासत आसफ़ी कहलाती है और उन्हीं के ख़ानदान में चली आती है ॥

इसी तरह सूबे अवध की हुकूमत भी सल्तनत मुग़लिया में सआदत ख़ां वज़ीर देहली के वक़्तमें उनके ख़ानदान में नसलन् बअद नसलन् चली आती थी सदी हालके शुरूअमें नव्वाब वज़ीर ने सरकार अंगरेज़ी की ख़ुशीसे ख़िताब बादशाह इख़त्यार किया बअद उसके इस मुल्कमें इस क़दर बद अमली और बद इन्तिज़ामी हुई कि सरकार को मुल्क लेने की ज़रूरत पड़ी और जब बादशाहने इससे इनकार किया तो लार्ड डलहौज़ी साहब बहादुर के वक़्त में वह मुल्क शामिल अमलदारी सरकार हुआ और बादशाह को पेन्शन हो गई ॥

सरकार आसफ़ी की मदद जो सरकार अंगरेज़ी ने की थी उस के बदले में सूबा बरार हमारी सरकार के सिपुर्द है और दो कमिश्नरियों में तक़सीम किया गया है ॥

मुमालिक राजपूताना में हिंदू राजाओं के कई बड़े बड़े राज्य हैं सूबा मैसोरको सरकार ने टीपू सुल्तान से फ़तह करके पुराने राजाको दे दिया था लेकिन अब सन् १८३२ ई० से बसबब बद इन्तिज़ामी सरकार के क़ब्ज़े में है और वहांके बड़े हाकिम साहब कमिश्नर बहादुर हैं वह मुल्क जो सरकार अंगरेज़ीके क़ब्ज़े में है उसके बड़े हाकिम नव्वाब गवर्नर बहादुर या लफ़्टिनेण्ट गवर्नर बहादुर या साहब चीफ़ कमिश्नर बहादुर या साहब कमिश्नर बहादुर हैं और इन सबके अफ़सर नव्वाब गवर्नर जनरल बहादुर व इसराय हिन्द हैं और अक्सर कलकत्ते में रहते हैं

इसलिये अब कलकत्ता इसी बाइस से दारुस्सल्तनत हिन्द कहलाता है नव्वाब साहबके मातहत साहब चीफ़ कमिश्नर बहादुर ब्रह्मामें भी हैं जिनके इन्तिज़ाम में रियासत आराकान और सूबा पेगू और सूबेजात टिनासिरिम सुपुर्द हैं इनका ज़िक्र यहां पहिले इस लिये नहीं किया गया कि बनज़र भूगोल बिद्या के यह सूबे मुल्क ब्रह्मा में दाख़िलहैं न कि हिन्दुस्तान में लेकिन बलिहाज़ अमलदारी सरकार अब उनको हिंदुस्तान से तअ़ल्लुक़ है॥

हिंदुस्तान के दक्षिण में टापू सिलोन ख़ूब और बहुत उम्दह जिसको हमलोग टापू लंकाभी कहतेहैं सरकारी अमल दारी में है लेकिन टापू लंकाके नव्वाब गवर्न्नर बहादुर ख़ास मलिकह मुअ़ज़्ज़मा के मातहत हैं इस टापूके बीचके हिस्सेमें कहवा बहुत पैदा होताहै और दारुल् हुकूमत शहर कुलंबो से यूरुपकोभेजा जाताहै॥

चालीसवां सबक़।

हिंदुस्तान के मशहूर शहरोंके बयान में॥

सिवाय उन शहरोंके जिनके नाम हम पहले लिख चुके हैं और जो हिन्दुस्तान के बड़े २ हिस्सोंकी हुकूमत गाह हैं बहुत ऐसे और हैं जिनके नाम हमको लिखने चाहिये और उनके निशानात नक्शह पर लड़कों को देख लेने चाहियें हाता मंदरास में शहर तंजोर का बड़ा बंदर बहुत मशहूरहै ट्रचना पलीके जवाहरात और चुरट-मडूरा का उम्दह महल जो अगले वक्त के एक हिंदू राजा ने बनवाया था—कोचीन और काली कट में समुद्रकी राह से बहुत सौदागरी होतीहै विलारी और उसके क़रीब में रुई बहुत पैदा होतीहै—बिज़िगा पट्टन की चीज़ों में हाथी दांत मशहूर है और उटाकमंड नीलगिरी पहाड़ परहै जहां बहुत से यूरुपी लोग बीमारी से अच्छे होने को जाते हैं—सूबह मैसोर में शहर मैसोरहै जहां राजा रहता है और बंगलोर सूबह मज़्कूर का अभी दारुल् हुकूमत है बंगलोर की आब वा हवा आधे

सालसे ज़ियादह अच्छा व सर्दरहताहै इसलिये बहुतयूरुपी लोग वहां रहतेहैं ट्रीवंड्रम ट्रावन्कोरका दारुल् रियासतहै निज़ामुलमुल्क में हैदराबादके नज़दीक सिकंदरा बाद अंगरेज़ीफ़ौजकीबड़ीछावनीहै॥

मध्यदेशीय सूबोंमें बड़े २ शहर बहुत नहींहैं लेकिन सागर व जबल पुर दारुल् हकूमत नाग पुरसे दूसरे दरजे परहै॥

हाता बंगाल के पूरबी सूबों में कटक सूबह उड़ीसा में है वहां के गहने मशहूर हैं॥

एक ज़माने में ढाके की मलमल कैसी मशहूर थी॥

मुर्शिदाबाद बंगाले का दारुल् रियासत था चन्द्र नगर फ्रांस वालों के क़ब्ज़े में है और पटना दरियाय गंग के किनारे बसता है॥

हाता बंगाल के पश्चिमीय उत्तरीय सूबोंमें सिवाय इलाहाबाद के जो दारुल् हुकूमत है बनारस यअ़नी काशी जिसको हिंदूलोग अपनी पुस्तकोंमें दुनियाका कमल कहतेहैं और कानपूर और आगरा और बरेली सब बड़े शहरहैं—आगरेमें ताज महल कैसा मशहूर है॥

पंजाबमें सिवाय लाहौर दारुल् हुकूमतके देहली अमृत सर पेशावर मुलतान बड़े शहर हैं मुसल्मान बादशाहों के वक़्तमें देहली बहुत दिनतक दारुल् सल्तनत रहा॥

हाता बंबई में—अहमदाबाद—भड़ोंच—सूरत—सितारा औरपूना है पूना मरहटों की राजधानी था॥

सूबह सिंधका दारुल् हुकूमत हैदराबाद है कच्छका भोज और सूबह गुजरात का बड़ौधा—राजपूताना में जयपुर बड़ा शहर है पहाड़ हिमालय पर शिमला है—गोवा पोर्टगीज़ लोगोंकी अमलदारी का दारुल् हुकूमत और पांडिचेरी जो शहर मंदरास के दक्खिन है इस मुल्कमें फ्रांस लोगोंकी अमल दारी का दारुल् हुकूमतहै॥

इकतालीसवां सबक़।

हिन्दुस्तान के घोड़ोंके बयान में॥

हिन्दुस्तान और गुजरात और बअ़ज़ दक्खिनके मुल्कों के घोड़े

जीवट और चालाकी और असालत और बहादुरी और सूरत और ख़सलत में निहायत उमदह देखने के क़ाबिल होते हैं टेढ़ी के टट्टू भी जो ज़िलअ गोंडा और बहरायच में बहुत हैं गोकि क़द में छोटे होतेहैं मगर निहायत मज़बूत और चालाक और अक्सर शोख़भी होते हैं लेकिन उनकी शोख़ी बसबब छोटे होनेके नुक़सान नहीं पहुंचाती है–पहाड़ी टांघनभी निहायत क़दम्बाज़ और असील और चालाक और ख़ूबसूरत होते हैं और क़द व क़ीमत में भी अरबी घोड़ों के बराबर होतेहैं इन घोड़ों की घोड़ियों को वहां के लोग इस ख़ियालसे कि इनकी नसल न फैलने पावे बाहर नहीं जाने देते हैं और घोड़ोंकी सौदागरी अलबत्ता और मुल्कों से होतीहै फिरभी वलायती घोड़ों को कहीं का घोड़ा नहीं पहुंचताहै क्योंकि जब राजा भाऊ शिकस्त खाकर मारा गया तो उसकी फ़ौजका भील नाम सरदार अपनी देशी घोड़ी पर सवार होकर भागा दुशमनकी तरफ़ से एक मुग़ल ने वलायती घोड़े पर सवार होकर उसका पीछा किया भीलने अपनी घोड़ीको सरपट डाला जहां दम लेनेको ठहरताथा तो देखताथा कि मुग़लभी अपने घोड़ेको टिक टिक करता हुआ चला आताहै मुग़ल जब क़रीब पहुंच जाताथा तो वह फिर अपनी घोड़ी सरपट हांकताथा और दो तीन कोस पर दम लेता था तो मुग़ल को उसी तरह आते देखता था आख़िर तीस चालीस कोसपर पहुंच कर घोड़ी शल होगई फिर कितनाहीं हांका हरगिज़ आगे न बढ़ी मुग़ल टिक टिक करता हुआ सिरपर पहुंच गया और उस को भालेसे मारकर घोड़ीसे गिरादिया और सब माल वा असबाब और हिमयानी असरफ़ियों की कमरसे लेकर लशकरकी राह ली मगर उसकी घोड़ी को बेकार समझ कर छोड़ दिया– धावा करने में अरबी घोड़े से बेहतर कोई घोड़ा नहीं है और सुघाई और रिफ़ाक़त असालत और गुर्बत और ख़ूबसूरती में मशहूर है ॥

बयालीसवां सबक़ ।

हाथीके बयान में ॥

हाथी हिन्दुस्तान के चौपायों में सूरत वा आदत में सबसे जुदा और लम्बाई और चौड़ाई में सबसे ऊंचा है रंगतमें काला और बअ़ज़ २ भूरा भी होता है जो डील में ज़रा छोटा होताहै और बअ़ज़ हाथी सफ़ेद होता है जिसे स्याम के लोग पूजते हैं उसको कमंछा और जो बड़ा होता है उसको कुंजल कहते हैं उसकी नाककी जगह एक सूंड़ लम्बीसी होती है उससे सब चीज़ उठाकर खाता है उसके मुंह में दो दांत गज़ २ भरके निहायत सख़्त और सफ़ेद बाहर निकले होते हैं कारीगर उन्हीं दांतों की कंघियां चूड़ियां क़लमदान डिबियां वग़ैरह बनाते हैं हाथी के सब अंग उसके डीलके मुआफ़िक़ होते हैं और जहां कहीं वह खड़ा होता है तो अक्सर सूंड़से ख़ाक उठा २ कर सिरपर डाला करता है गुस्सहके वक़्त इससे शेर भी दबजाताहै हक़ीक़तमें यह जानवर निहायत बहादुर होताहै तोप बंदूक़को फुलझड़ी से कम समझता है इसीसे लड़ाई में एक हाथी सौ सवारोंसे ज़ियादह काम आता है ॥ दमे जंग डरता नहीं ज़ीन हार। जो तोपें हज़ारों चलें एक बार ॥ जबहाथी मस्तहोते हैं तो अक्सर अमीर तमाशा देखने के लिये उनको लड़ाते हैं फ़ीलवान लोग बड़ी फुरती से जब हाथियोंको मुक़ाबिल करते हैं तो कभी यह उसको रेल जाता है और कभी वह उसको ढकेलता है और भाले बरदार और कोड़े बरदार भाले लिये चरख़ियां छोड़ते हुये साथ लगे रहते हैं सचतो यहहै कि यही ऐसे जानवर हैं कि सूड़ों के पेच मस्तकों की टक्कर दांतोंकी रगड़ आपस में सहते हैं और फ़ीलवानों की फ़ुर्ती और जांबाज़ी की भी शाबाश है कि उस हालत में अंकुश से उनको नीचा किये गरदन पर सवार रहते हैं और जब कोई फ़ीलवान मर जाता है तो उस वक़्त दूसरा उसकी जगह आ जाता है ॥

तेतालीसवां सबक़ ।

हाथीकी तारीफ़ोंके बयान में ॥

हाथी बहुत अक़्लमन्द होता है मशहूर है कि एक फ़ीलवान ने अपने हाथी को बेक़सूर आंकुश थान पर मारे थे इस सबब से वह फ़ीलवान का दुश्मन होगया था रातको फ़ीलवान हाथी से थोड़े फ़ासिले पर चार पाई बिछाकर सोरहा और अपना भाला हाथी और चारपाई के बीचमें गाड़ दिया हाथी ने अपना बदला लेने को फ़ीलवान की तरफ़ सूंड़ दौड़ाई जब उसको न पाया तो भालेको सूंड़ से उखाड़ कर उसके बांस को ख़ूब चबाया जब उस में रेशे २ निकल आये तो एक तरफ़ सूंड़ से पकड़ के रेशेकी तरफ़ से फ़ीलवान के बालों में डालकर ख़ूब लपेट लिया और भालेके ज़ोर से फ़ीलवान को खींचलिया और पैरसे दबाकर मारडाला जब उसकी बीबीको मअ़लूम हुआ तो उस ने निहायत रंजीदह होकर अपने छोटे लड़के को उसके आगे डालदिया और कहने लगी कि अब इसको कौन पालेगा इसको भी मारडाल हाथी ने उसको उठाकर अपने सिरपर बिठालिया इसके ये मअ़नी थे कि इसको फ़ीलवान बनाओ फिर अगर और कोई फ़ीलवान उसपर सवार होताथा तो शोख़ी करताथा और जब वह लड़का बिठला दिया जाता था तो वह सीधा चला जाता था आख़िर कार वह लड़काही उसका फ़ीलवान हुआ रहम दिल भी ऐसा ही होता है कि अगर कोई लड़का रास्तेमें पड़ा होताहै तो उस को सूंड़ से उठाकर किनारे बिठला देता है हाथी घोड़े से क़ीमत और सुथराई में सिवा होता है इसी तरह इसका सवार सब सवारों से ऊंचा और शानदार होता है ॥

चवालीसवां सबक़ ।

सर्वनामके बयान में ॥

सर्बनाम वहहै जो उत्तममध्यमवाअन्य पुरुषके बदले बोला जावे॥

उसके छः शब्द हैं मैं हम तू तुम वह वे ॥

प्रकट हो कि लखनऊके उत्तम लोग वह को एक बचन और बहुबचन दोनों में बोलते हैं ॥

फिर सर्बनाम के तीन भेद हैं सर्ब नाम कर्त्ता वा ज़मीर फ़ायल, सर्ब नाम कर्म वा ज़मीर मफ़ऊल, सर्ब नाम सम्बन्ध वा ज़मीर मुज़ाफ़, सर्ब नाम कर्त्ता वा ज़मीर फ़ायल वह सर्बनाम है जो कर्त्ता के कारक में आवे ॥

सर्वनाम कर्त्तावा ज़मीर फ़ायल	एक बचन	मिसाल	बहुबचन	मिसाल
उत्तम पुरुष	मैं	मैं आया	हम	हम आये
मध्यम पुरुष	तू	तू आया	तुम	तुम आये
अन्य पुरुष	वह	वह आया	वह	वह आये

सर्व नाम कर्म वा ज़मीर मफ़ऊल—वह सर्बनामहै जो कर्मके कारक में आये ॥

सर्वनामकर्मवा ज़मीर मफ़ऊल	एकबचन	मिसाल	बहुबचन	मिसाल
उत्तमपुरुष	मुझको यामुझे	मुझकोयामुझेदिया	हमकोयाहमें	हमकोयाहमेंदिया
मध्यमपुरुष	तुझकोयातुझे	तुझकोयातुझेदिया	तुमकोयातुम्हें	तुमकोयातुम्हेंदिया
अन्यपुरुष	उसकोया उसे	उसको याउसेदिया	उनकोयाउन्हें	उनकोयाउन्हेंदिया

सर्व नाम सम्बन्ध वा ज़मीर मुज़ाफ़, वह सर्ब नाम है जो सम्बन्ध के कारक में आये ॥

सर्वनामसंबन्ध वाज़मीर मुज़ाफ़	एकवचन	मिसाल	बहु बचन	मिसाल
उ॰पु॰	मेरीयामेरे	मेरीक़लममेरेचाक़ू मेरी किताब दो	हमारा-हमारे हमारी	हमाराक़लमहमारेचाक़ू हमारी किताब दो
म॰पु॰	तेरायातेरे या तेरी	तेरानामतेरीकिताब तेरे भाई	तुम्हारा-तुम्हारे तुम्हारी	तुम्हारानामतुम्हारेघर तुम्हारी क़ौम
अ॰पु॰	उसकाउसके उसकी	उसकाबेटाउसकेभाई उसकी ज़ात	उनका-उनके उनकी	उनकाघर उनकेपास उनकी तारीफ़

पैंतालीसवां सबक़।

हिन्दुस्तान के रहने वालों और उनकी बोलियों और मज़हबों और पेशों के बयान में॥

सिवाय चीनके जिस क़दर एशिया में हिन्दुस्तान आबाद है उस क़दर और कोई मुल्क नहीं यअ़नी जिसक़दर आदमी हिंदुस्तान में बसते हैं उस क़दर एशिया के और किसी मुल्कमें नहीं बसते लेकिन हर हिस्सों के लोग तरह तरह के हैं और जुदी २ बोलियां बोलते हैं और इसी तरह पर अक्सर जुदे २ मज़हब भी रखते हैं मुख्य करके हिंदुस्तान के लोग हिंदूहैं और उनके बअ़ज़ मुसल्मान—हिंदू बनिस्बत मुसल्मानोंके सात हिस्से ज़ियादह हैं हिंदू बहुत ज़बाने बोलते हैं जैसे दक्खिन में तामिल और तिलंगू पश्चिममें मलायालम कनारी मरहटी—गुजराती सूबह बंगाले में बंगाली सूबह उड़ीसा में उड़िया पश्चिमी मुल्कोंमें हिन्दी—पंजाब में पंजाबी कश्मीर में कश्मीरी और पहाड़ हिमालय के मुल्कों में तरह २ की पहाड़ी इसी तरह पर और सब हिन्दके मुसल्मानोंकी ज़बान एक ख़ास तौर की हिंदुस्तानी होगईहै जिसको उर्दू बोलतेहैं और अब तुम जानतेहो कि जाबजा सरकारी मदर्से जारी होगयेहैं उनमें अंगरेज़ी भी पढ़ाई जाती है और सैकड़ों किताबें व अख़बार ज़बान अंगरेज़ी में छपते हैं हिंदुस्तान में ख़ास मज़हब हिंदुओंका और मुसल्मानों का है मगर पंजाबके लोग अक्सर सिक्खमज़हब रखते हैं और बअ़ज़ मुक़ामों में जैन मतके मानने वालेहैं॥

बुध का मज़हब नेपाल ब्रह्मा और लंका और भूटान और बअ़ज़ हिस्सों में तिब्बत के जारीहै बअ़ज़े लोग पारसी हैं बअ़ज़ यहूदी और बअ़ज़ ईसाई इसी तरह पर हिन्दुस्तानके लोग अक्सर खेती करते हैं और अक्सर मुक़ामों पर काश्तकारी के हुनर को निहायत अच्छी तरह समझते हैं और उसपर अमल करतेहैं मगर बअ़ज़ जगह अजब तरह कुढंगे तौर से खेती करते हैं

जैसेकि बज़ज़ जंगली लोग जो दरमियानी मुल्कोंके पहाड़ी हिस्सों में बसते हैं पहिले जंगलके एक टुकड़े को जला डालते हैं तब वहां ज़मीन में कुदालों से बहुत से सूराख़ कर देतेहैं और उन सूराख़ों में कई क़िस्मोंके बीज भरदेते हैं और फिर उनको ईश्वर के भरोसे पर छोड़ देतेहैं शहरों और क़स्बोंमें अक्सर लोग सौदागरी करते हैं कपड़ा बुनते हैं मिट्टीके बर्त्तन बनातेहैं तांबे और पीतल के वर्त्तन बनाते हैं ज़ेवर और बहुतसी चीज़ें जिनकी चाह रहती है तैयार करते हैं हिंदुस्तानके जुलाहों की कारीगरी मशहूर है और जिन चीज़ोंके बनानेमें सफ़ाई हाथकी ज़रूरहै वे हिंदुस्तान में सराहने के लायक़ बनतीहैं जैसेकि देहलीमें बज़ज़ तरह के ज़ेवर ख़ास कर जड़ाऊ और कश्मीर के शाल दुशाले कैसे उम्दह क़ीमती बनते हैं तअज्जुब यहहै कि इन लोगों के औज़ार निहायत सादे और अक्सर भद्दे बेडौल होतेहैं और कलों से बिलकुल नावाक़िफ़ हैं इसी सबब से अक्सर चीज़ें दस्तकारी जो यूरप में कलों के द्वारा निहायत सस्ती तैयार होतीहैं हिंदुस्तानमें दस्तकारी के पेशोंको बिलकुल कम करती चली जातीहैं ॥

थोड़े अरसे से दारुल् हुकूमत बम्बई और बज़ज़ और मुक़ामों में वलायती कलें जारी हुईहैं और अब सूती कपड़ा जैसा यूरप से आता था वैसा हिंदुस्तान में भी बहुत तैयार होताहै ॥

छियालिसवां सबक़ ।

हिन्दुस्तान की सौदागरी और बंदरोंके बयानमें ॥

सौदागरी हिंदुस्तान की बहुत मुल्कोंसे जारीहै लेकिन मुल्क इंगलिस्तान और फ्रांस और चीन उनमें से ख़ास हैं सूती कपड़े और लोहे की चीज़ें यूरप से हिंदुस्तान में आतीहैं और रेशम और नील बंगाले से बाहर को जाती है और बंबई और मदरास से रुई और चावल और गन्ना और वे चीज़ें जिन से तेल निकलता है हिंदुस्तान के और हिस्सोंसे और मुल्कों को जातीहैं और अफ़

यून कलकत्ते और बंबई में होकर चीन में बहुत जातीहै खुश्की की राहसे भी हिंदुस्तान और नज़दीकके मुल्कोंसे बहुत सौदागरी होती है जैसे ईरान से घोड़े आते हैं अफ़ग़ानिस्तान से हींग और मेवे और तिब्बत से ऊन ॥

जिन मुक़ामों में समुद्रकी राहसे आपस में सौदागरी करते हैं उनको बंदर बोलते हैं जैसा कि हिंदुस्तानके ख़ास बंदर कलकत्ता बंबई मद्रास हैं ॥

सैंतालीसवां सबक़ ।

हिंदुस्तान की आब व हवाके बयान में ॥

हिंदुस्तानका मुल्क बहुत गर्महै यहांतक कि दुनियांके निहायत गर्म मुल्कोंसे एक यहभी है लेकिन सब हिस्से एकसे गर्म नहीं हैं यअनी पहाड़ी हिस्से बनिस्बत मैदानोंके ज़ियादह सर्दहैं बर्षा भी बहुत होतीहै लेकिन बअज़ मुक़ामों में ज़ियादह और बअज़ में कम जैसे पश्चिमी किनारेपर बनिस्बत पूर्वीकिनारे केज़ियादह पानी बरसता है और सूबे बंगालमें भी बहुत पानी बरसताहै कि वहांके दरियाओंका पानी उनके किनारोंसे ज़ियादह ऊंचा होजाता है और इधर उधरके इलाक़ों मेंजो सपाट और बराबरहैं कईफ़ीट गहरा पानी छा जाताहै ऐसी बाढ़ियोंके वक़्तवहां के लोग जब एक जगह से दूसरी जगह जाना चाहतेहैं तो नावों में जाते हैं किस वास्ते कि और किसीतरह गांवतक नहीं पहुंचते और इसी सबब से अक्सर वहांके गांव सख़्त ज़मीनके ऊंचे २ टीलोंपर आबादहैं ॥

अड़तालीसवां सबक़ ।

हिन्दुस्तान की पैदावारियों केबयान में ॥

अगर्चेह हिंदुस्तान में निहायत मुफ़ीद और बहु मोल खानों की चीज़ें बहुतसीहैं जैसे पत्थर—लोहा—लेकिन उनकी तरफ़ बहुत ख़ियाल नहींहै नमक अलबत्तह बहुत समुद्र में और सखाकर के

पूर्वी किनारे और मुल्क राजपूताना की नमक वाली झीलों से निकाला जाताहै और मलाबारके पश्चिमी किनारे में सोना दरियाफ़्त हुआहै शोरह सूबे अवध से हासिल होताहै और पत्थर का कोयला बंगाले में रानीगंजसे और कई एक मुक़ामों से निकलता है और सब तरह के दरख़्त हिंदुस्तान में पैदा हो सक्ते हैं लेकिन जो चीज़ें अक्सर खेतों में पैदा होती हैं वे ये हैं चावल—गेहूं—चना—ज्वार—बाजरा—उरद—मूंग—मोठ—मसूर—अरहर—पोस्त—ईख—रुई—नील— वग़ैरह दरख़्त जो हिंदुस्तान में उगते हैं उन में बअ़ज़ से बहुत अच्छे लट्ठे हासिल होते हैं और बअ़ज़ से नफ़ीस मेवे और बअ़ज़ से ख़ूब सूरत फूल सब की ख़ूब सूरती के देखने से आंखों को तरावट और उनके साये से दिल को ख़ुशी होतीहै जो हिंदुस्तानके मुल्क पहाड़ों से ख़ालीहैं उनमें नारियल खजूर ताड़ आंब मेवे के दरख़्त बहुत हैं और पहाड़ी मुल्कोंमें सैकड़ों तरह के फ़ायदे देने वाले दरख़्त पैदा होते हैं ख़ास कर बांस और साखू तुम जानते हो कि तरह २ की फ़ायदेवर चीज़ें और भी पैदा होतीहैं ख़ासकर गर्म मसाले और तरकारियां जोकि हम लोगों में रोज़ काम आती हैं पश्चिमी किनारे से गोल मिरच आती है और उत्तर दच्छिण पहाड़ों में से चाय और क़हवा और कुनैन भी थोड़े दिनों से पैदा होतीहै इस मुल्क में तरह २ के रंगों की चीज़ें पैदा होतीहैं जिससे हम अपने कपड़े रंगतेहैं और दवायें जो हम को बीमारी से अच्छा करदेती हैं ख़ुलासह यह कि हम बग़ैर लगावट कह सकते हैं और अक्सर बड़ाई के सबब से कहा भी करतेहैं कि जो चीज़ें हमारे आराम के वास्ते ज़रूर हैं वे सब हिंदुस्तान में मौजूदहैं दूसरे मुल्क से किसी चीज़ के मंगाने की ज़रूरत नहींहै अब देखो हज़ारहा क़िस्मों के जानवर हिंदुस्तान में हैं और उन से तरह २ के हमको आराम और फ़ायदे होते हैं गायें और भैंसें दूध देतीहैं बैलों से छकड़े और हल जोते जाते हैं घोड़े ऊंट कुत्ते भेड़ियां बकरियां और बहुत से बेहिसाब जान-

वर कैसे काम के हैं और सच तो यहहै कि अगर हम चाहें तो एक सफ़ह का सफ़ह ऐसे जानवरों के नामोंही से भरदें जो हिंदुस्तान में किसी न किसी तौर पर काम में लाये जाते हैं सिवा इस के जानवर जंगली जैसे कि चीता और बाघ और हाथी वग़ैरह जंगलों में बहुतहैं और छोटे जानवर जैसे कि गीदड़ चील और सांप कुल हिंदुस्तान के मुल्कों में मिलते हैं ॥

उनचासवां सबक़ ।

गैंडा के बयान में ॥

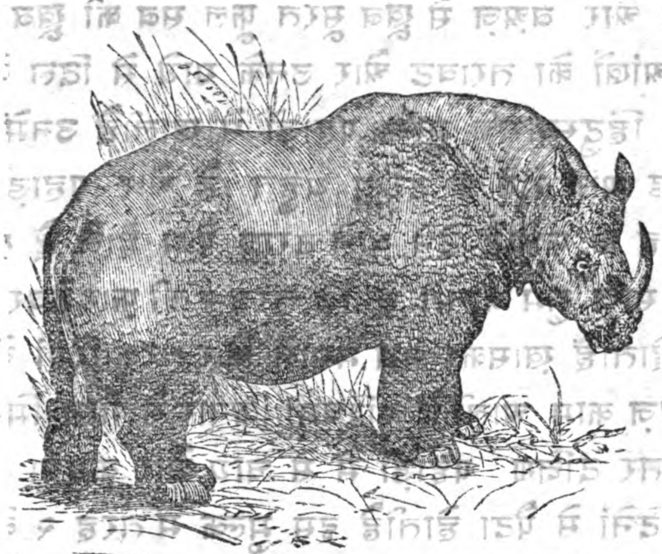

गैंडा हिंदुस्तान के जानवरोंमें बड़ाओरअजीब सूरत का होता है उसके हरपांव में तीन खुर होतेहैं याद रहे कि गैंडा चार क़िस्म का होताहै और हिंदुस्तान के गैंडे की अट्ठाईस डाढ़ें और चार दांत और एक सींग नाक पर होताहै और उसका चमड़ा कांधों पर और पुट्ठों पर तहबतह होताहै और ऐसा सख़्त होता है कि उस पर गोली और तलवार वग़ैरह मुश्किल से असर करतीहै यह जानवर बहुत जानवरों से ज़बरदस्त है इसके जंगल में शेर अरना हाथी कभी नहीं आता इस की खाल की ढाल बनती है

आफ्रिका के गेंडे के दो सींग होते हैं और उसकी खाल तहबतह नहीं होती और न उसके दांत बंडैले सुअर कैसे होते हैं हवश के लोग उसे तलवार से इस तरह मारते हैं कि पीछे से उस के कूचे काट डालते हैं गेंडे की आंख बहुत छोटी होती है और शिर बड़ा होताहै लेकिन गरदन ऐसी सख़्त और छोटी होतीहै कि वह पीछे फिरकर नहीं देख सकता पालू गेंडा अढ़ाई मन चारा रोज़ खाताहै अरना भैंसा भी बड़ा ज़ोरावर और बहादुर जानवर है उसके सींग निहायत नुकीले और सियाह रंग गज़भर से कुछ बड़े होतेहैं बहादुर ऐसा होताहै कि शेर और हाथी से नहीं डरता दो अरनों में जब एक शेर फंस जाताहै तो उसको गेंद बनालेतेहैं एक अरना अपने सींगों पर उठाकर दूसरे की तरफ़ फेंक देता है और इसी तरह दूसरा भी फिर पहिलेकी तरफ़ फेंक देताहै जब तलक उसका दम नहीं निकलता है तब तलक यही किया करते हैं आपस में भी बड़ी बहादुरी से लड़ते हैं—बअज़ २ ऐसा जीवट का होताहै कि अकेला हाथी पर जा पड़ताहै एक मरतबह नव्वाब आसफुद्दौलह बहादुर पुखरे की झील के जंगल में शिकार खेलतेथे यकायक अरने भैंसे निकलआये और बंदूकें चलने लगीं उनमें एक भैंसा झुंझला कर नव्वाब हसन रज़ा ख़ां की हथिनी पर आ पड़ा और हथिनी के पिछले धड़ को सींगों पर उठाकर ऐसा रेला कि हथिनी गिरपड़ी मगर नव्वाब की ख़ैर होगई फ़क़त हथिनी ज़ख़्मी हुई और अरना गोलियों से मारा गया उसकी मादह का दूध निहायत ताक़त वर और मीठा और सफ़ेद और चिकना होताहै॥

पचासवां सबक़।

बादल और बिजलीके बयान में॥

बादल ज़मीनके भाफ़ से पैदा होताहै जितनी भाफ़ ज़मीनसे ज़ियादह निकलतीहै उतनाही पानी ज़ियादह बरसताहै पहाड़ों पर ज़ियादह बारिश का यह सबबहै कि नीचे के मुल्कोंसे और

समुद्रसे जो भाफ़ उठतीहै वह पहाड़ों से टक्कर खाकर वहीं रुक जातीहै और सरद होकर बरसतीहै हिन्दुस्तानमें अकसर पूर्व और दक्षिण की हवामें ज़ियादह पानी बरसताहै और किनारे मलाबार में दक्षिणी पश्चिमी हवा से और किनारे कारो मंडल पर उत्तरी पूरबी हवासे बादलमें बिजली रहतीहै और जब दो बादल आपस में मिलते हैं और एक में बिजली ज़ियादह होतीहै तो जिसमें ज़ियादह होतीहै उससे दूसरेमें चली जातीहै और उसके जाने के वक़्त चमक नज़र आतीहै उसको बिजली कहतेहैं और वह बहुत ज़ोरसे हवा पर चलतीहै इसलिये हवाके फटनेसे आवाज़ होतीहै उसे गरजना कहतेहैं आवाज़ बिजलीके चमकनेके कुछ देर बअद मअलूम होती है क्योंकि रोशनी आवाज़ से जल्द चलती है इसी हिसाब से उंचाई बादल की इस तरह दरियाफ़्त हो सकती कि चमकसे अगर नाड़ीकी तीन हरकतोंके बअद आवाज़ सुनाई दे तो बादल एक मील ऊंचा होता है रोशनी एक मिनट यअनी अढ़ाई पलमें १९२००० एक लाख बानवे हज़ार मील चलतीहै बिजली जिस चीज़पर गिरतीहै उसको जला देती है इस तकलीफ़ से बचने के लिये इंगलैण्डके अक़्लमंद लोगोंने यह तजवीज़ निकालीहै कि तांबे की एक शलाख़ दीवारके क़रीब छतसे दसबारह फ़ीट ऊपर रखतेहैं तो बिजली उसमें समाजातीहै और सब मकान बच जाताहै क्योंकि बिजली अक्सर ऊंची चीज़ पर गिरती है इसलिये बारिश के वक़्त दरख़्त और दीवार के नीचे न ठहरना चाहिये कई एक चीज़ें ऐसी हैं जो बिजलीको जल्द खींच लेतीहैं जैसे कि लोहेपर बिजली ज़ियादह गिरतीहै और कांच पर नहीं गिरती ॥

इक्यावनवां सबक़ ।

गलो लियो साहबके बयानमें ॥

गलो लियो साहब इटलीके रहने वाले यूरुपके अक़्लमंदों में हैं सन् १५६४ई० मेंपैदाहुये जब रियाज़ी इल्म पढ़ चुके तो सन्१६०९

ई० में दूर बीन और खुर्द बीन बनाई इल्म खगोल वा हयअत के बड़े शौक़ीन थे रात २ भर सितारे देखा करतेथे सन् १६१९ई० में मुश्तरी सितारह मअलूम किया और यह भी ज़ाहिर किया कि ज़मीन आफ़ताब के गिर्द घूमतीहै लेकिन यह क़ौल उनका जुर्म क़रार दिया और इस जुर्म में सन् १६३३ई० में क़ैद भी हुए आख़िर वे अंधे होकर सन् १६४२ई० में ८८ बरस की उमर के होके मरगये ये बहुत बड़े हकीम थे इन्हों ने एक तरह की दूरबीन बनाई जिससे यह दरियाफ़्त किया कि बृहस्पति के आस पास चार चांद हैं और यह भी देखा कि बीनस यअनी ज़ोहरह जिसे शुक्र कहते हैं मिस्ल चांद के सकलें बदलता है और कहकशां यअनी आकाश गंगा में बहुत से छोटे २ तारे हैं और इन सब बातों को छपवा दिया उस ज़माने के पादरियों ने ज़मीन के घूमने को अपने मज़हब के ख़िलाफ़ समझ के गलीलियो साहब को जवाब दिही के लिये उस मजलिस में जहां गुमराह लोगोंको सज़ा दी जातीथी बुलाया वहां के लोगों ने उनको सज़ासे बचाने के लिये ज़बरदस्ती कहलवा लिया कि ज़मीन नहीं घूमती है मगर थोड़े दिनों में उनकी मज़बूत दलीलों से अक्सर को यक़ीन होगया कि ज़मीन घूमती है तब पादरियों को गुस्सह आया और ७० बरसकी उमरमें उनको क़ैद करके हमेशह के लिये क़ैदकरदिया मगर एक सालके बअद टसकनी के बादशाह के कहने और आजिज़ीसे छूटगये और इसी रंज व ग़म में मरगये उनके बअद और हाकिमों ने जो उनकी दलीलों को आज़माया तो सब सही और दुरुस्त पाई अब इन्हीं के बनाये हुये इल्म हयअत के क़ायदे मदर्सों में पढ़ाये जाते हैं और उन्हींकी बनाई हुई दूरबीन और ख़ुर्दबीन काम आती है ॥

बावनवां सबक़।

दर्शक सर्व्वनाम के बयान में ॥

दर्शक सर्व्वनाम वह है जिस से किसीकी तरफ़ इशारह किया

जावे—और दर्शक सर्व्व नाम के चार शब्द हैं—दो दर्शक सर्व्वनाम नज़दीक के वास्ते—दो दर्शक सर्व्वनाम दूरके लिये॥

एक वचन	मिसाल	बहु वचन	मिसाल
दर्शक सर्व नाम नज़दीक यह	यहकिताबअच्छीहै	यह	यहकिताबें अच्छी हैं
दर्शक सर्वनामदूर वह	वह कौन है	वह	वह कौन हैं

ज़ाहिर होकि लखनऊ के उत्तम लोग यहके शब्दको एकवचन और बहु बचन दोनों में बोलते हैं॥

और इसी तरह वहके शब्दको भी एकवचन और बहु वचन दोनों में बोलते हैं॥

त्रेपनवां सबक़।

न्यूटन साहबके बयान में॥

न्यूटन साहब बड़े अक़्लमंदथे सन् १६२४ ईसवी में ज़िलअ लिंकन में पैदा हुए निहायत ठिंगने और नर्म तबीयत थे ८० बर्ष की उम्रतक सही व तन्दुरुस्त रहे १२ बर्ष की उम्रमें जबये मदर्से में पढ़ते थे तो मुदर्रिस उनकी तबियत को देखकरकहाकरतेथे कि यह लड़का थोड़े अर्सेमें बड़ा हकीम हो जायगा इन के शौक़ का यह हाल था कि जब सब लड़के छुट्टी पातेथे तो येअकेले बैठे हुए मदर्से में लकड़ीके चक्कर और तरह २ की कलें बनाया करते थे कभी पतंग में चिराग़ जलाकर उड़ाया करतेथे और कभी पुतली में चर्ख़ लगाकर कलके ज़ोर से दौड़ाया करते थे उन्होंने अपनी अक़्लके ज़ोर से सब सितारों के वक़्त उदय व अस्त व मक़ाम व चाल दरियाफ़्त करने के क़ायदे बनाये इनकी मा अकसर इन्हें मदर्से से बुलाकर खेतीके काम या बकरियां चराने को अपने साथ रखती थी ये जंगलोंमें दरख़्तों के नीचे बैठ कर किताबों को देखाकर-

तेथे एकदम भी बेकार न रहते थे इन के पढ़ाने पढ़नेके वास्ते ट्रिनिटी कालिज में जो भेजा तो चन्दरोज़में अपनी इस तग्रदाद व तेज़ी तबीग्रत से उसी कालिजके मिम्बर बनाये गये सन् १६६० ई० में ख़िताब फ़ज़ीलत हासिल किया एक दिन ये एक बाग़में बैठे थे कि एक पका हुआ सेव दरख़्त से ज़मीन परगिरा इन्होंने सेव के गिरनेमें अक़्ल दौड़ाई कि यह सेव किस सबब से गिरा तोइन को मग्रलूम हुआकिज़मीनमें कुव्वतकशिशहैयह अपने जिस्मकीचीज़ अपनी तरफ़ खींच लेतीहै अक्सर मसलें इल्म हयग्रत व जुग़राफ़ियह के भी इसी मसलेसे निकलते हैं सन्१६६६ ई० मेंये गणित रियाज़ी के मुदर्रिस आलाहुए और जब मलिकहयेन मदर्से आलियह में तशरीफ़ लाईं तो सन् १७०५ ई० में उन्हें ख़िताबनैटइनायत किया इनसे विद्या भूगोल और इल्म मनाज़िर और इल्महयग्रतने बड़ी तरक़्क़ी पाई इन्होंने इन फ़नों में बहुत सी किताबें बनाईं तिस पर भी इस क़दर विद्या और इज्ज़त के समेत येनिहायत सीधे व दीनदारथे सन् १७२७ ई० मेंये मर गये और वेस्टमिनिस्टर में दफ़्न किये गये॥

चौवनवां सबक़ ।

कलम्बस साहब के बयान में ॥

कलम्बस साहब यूरूप के जहाज़ चलाने वालों में बड़े नामी थे सन् १४३४ ई० में शहर जेनुआ में पैदा हुए लड़कपन से भूगोल की किताबें देखा करतेथे थोड़े दिनों मदर्से पेडुआमें पढ़ा चौदह वर्ष की उम्रमें मदर्सह छोड़ कर जहाज़ चलानेकी नौकरीकी सन् १४७० ई० में शहर लिसबन में जाकर एक औरत से जिसका बाप इटली का रहने वाला था शादीकी उन दिनों तक लोग यह जानते थे कि टापू मडेरा और कैनेरी के आगे पानी के सिवा कुछ नहींहै उन्होंने ज़मीन की सूरत देखकर जान लिया कि अटलांटिक महासागर के पश्चिम तरफ़ नये २ टापूहैं और पानी की राहसे हिन्दु-

स्थानमें पहुंच सकते हैं इसलिये उन्होंने एक अर्ज़ी बादशाह पुर्त गाल कीख़िदमत्में भेज कर वहां जाने के लिये मदद मांगी मगर वह अर्ज़ी मंज़ूर न हुई तब कलम्बस साहब सन् १४८४ ई० में लड़के वालें के ले के पुर्त्तगाल से निकले और अपने भाई वोर्थीलोम्यु के मदद मांगने के लिये सातवें हिनरी इङ्गलिस्तानके बादशाहके पास भेजा वोर्थीलोम्यु राह में लुट भी गया और इङ्गलिस्तानसे मदद भी न मिली फिर उन्होंने उसी क़िस्मकी अर्ज़ी स्पेन के शाहज़ादोंको दी उन्होंने उनकी दरख़्वास्त मंज़ूरकी सन् १४९२ ई०में वह जहाज़ पर सवार होकर चले और टापू केनेरी में पहुंच कर छठी सितम्बरको आगे चले चलते २ ग़ल्ला वग़ैरह जहाज़ पर कम रह गया इसलिये उनके साथी उनसे बहुत नाराज़ होगये बल्कि यह इरादह करते थे कि उनको डुबोकर आप फिरजांय इतने में एक दिन उन्होंने बहुत सी चिड़ियां उड़ती देखीं तब उनको यक़ीन होगया कि अब जल्द कोई टापू मिलेगा मगर उनके साथियों की घबराहट किसी तरह कम न होती थी हर चंद कलम्बस साहब उनकी तसल्ली और दिलासा करते थे मगर कुछ फ़ायदह न होता था हक़ीक़त में घबराने का मक़ाम था ॥

पचपनवां सबक़ ।

बाक़ीसफ़रकलम्बस साहब का ॥

ग्यारहवीं अक्टूबर को कलम्बस साहब के जहाज़ वालें ने बेदकी लकड़ी और सब्ज़ पत्ती समुद्र में बहती देखी तब उन को यक़ीन होगया कि अब बहुत जल्द ज़मीनदिखाई देगी दस बजे रात को उन्होंने चिराग़ की रोशनी देखी और अपने दोस्तों को भी दिखलाई उन सबको हदसे ज़ियादह ख़ुशी हुई दो बजे रात को एक मल्लाह ने ज़मीन देखी सुबह होते २ उन सबने अपनी आंखोंसे एक टापू देखा वहांके रहने वालोंने कभी जहाज़ न देखा था इस लिये जहाज़ को जानदार समझ के सब आकर जमअ हो

गये पहिले कलम्बस साहब जहाज़ से उतरे और बादशाही निशान स्पेनके शाहज़ादों के नाम से उस टापूकी ज़मीन पर गाड़कर उसका नाम सेन साल वेडोर रक्खा और वहां के लोगों को लाल टोपियां और कम क़ीमती चीज़ें दीं उस टापू के लोग जहाज़ वालोंको यह समझे थे कि आसमान परसे उतरे हैं इसलिये उन की बड़ी क़दर और इज्ज़त करते थे और उनकी ज़राश्सी चीज़ों को प्रसाद समझतेथे फिर कलम्बस साहब ने उत्तर और पश्चिम की तरफ़ सफ़र किया और रास्ते में बहुतसे टापू दरयाफ़ किये उनमें से क्युबाबहुत बड़ा टापू है बअद उसके और बहुत से टापू दरयाफ़ करके शहर लिसबन की तरफ़ लौटके सन् १४६४ ई० में वहां पहुंच कर मुल्क स्पेनमें गये और वहां के बादशाह सेअपना सब हाल बयान करके बहुतसा इनआम लिया और वे सब टापू बादशाह स्पेनकी अमलदारी में दाख़िल करदिये सन् १५०६ ई० में कलम्बस साहब मर गये॥

छप्पनवां सबक़।

मुल्कइंगलिस्तानकेबयानमें॥

ग्रेट ब्रिटिन यूरूपमें बड़ा टापू है और इंगलेंड और स्काटलेंड और वेल्स से मिलकर इस नाम से बोला जाता है दक्षिण में इंगलेंड और वेल्स और उत्तर में स्काटलेण्ड है वेल्सकेपश्चिम तरफ़ एक टापू आइरलेण्ड है बीचमें एक खाड़ी है इंगलेण्ड के रहने वाले इंगलिश और स्काटलेण्ड वाले स्काच और आयरलेण्ड वाले आयरिश कहलाते हैं आगे इन चारों मुल्कोंकी बोलियां अलग २ थीं अब गोया सब अंगरेज़ी बोलते हैं इंगलेण्ड हिन्दुस्तान के केपके रास्ते से बारह हज़ार मील दूर है आगे चार पांच महीने में जहाज आता था मगर अब लोग एक महीने में इस तरह पहुंचते हैं कि बम्बई से धुयेंकश पर सवार होकर स्वेज़ तक सत्रह दिन में और स्वेज़से इसकंदरया और मिस्र तक खुश-

की राह से सात दिन में फिर धुर्येकश पर छः दिनमें इंगलैण्ड में पहुंच जाते हैं या नहीं तो फिर स्वेज़ से होकर बराबर पानी २ लंडन में पांच छः हफ़्ह में पहुंच जाते हैं हज़रत ईसा के पैदा होने से छप्पन बर्ष पहिले ज्यूलियस कैसर रूम ने इंगलिस्तान को फ़तहकिया उन दिनों तक वहां के लोग लिखना पढ़ना न जानतेथे और फूसके झोंपड़ों और ग़ारों और दरख़्तों की आड़में रहते थे और आक़बत के तअ़द्दाद पर क़र्ज़ लेतेथे और जंगलों के फल और दूध और शिकार का गोश्त खातेथे और जानवरों की खाल पहनतेथे और हाथ पैरों को नीला रंगते थे और बुतों को पूजतेथे और उन पर आदमियों को बलि देते थे इन लोगोंके तीन भेद थे एक भाट जो बहादुरों के कबित्त बनाते थे दूसरे वेटीज़ वे दीन की नसीहत और इल्म ग़ैब बयान करके लोगों को फुसलाते थे तीसरे फ़िरक़ह ड्रूइड दीनीकामों में लगे रहते थे फ़ौजदारी और दीवानी की हुकूमत इसी फ़िरक़ह कोथी जो इन का हुक्म न मानता था वह मारा जाताथा चार सौ वर्ष तक इंगलिस्तान में रूमियों का अमल रहा सन ४१० ई० में शाहन्शाह होनवरीस ने सब फ़ौज और हुकूमत इंगलिस्तान सेउठाली कुसतुनतैन बहुत बड़ा बादशाह जिसने शहर कुसतुनतुनिया बनाया था एक इंगलिस्तानकी औरत के पेटसे था और वहीं पैदा हुआथा ॥

सतावनवां सबक़ ।

बाक़ीबयानइङ्गलिस्तानका ॥

जब रूमियों का अमल इंगलिस्तान से उठ गया तो स्काटलैण्ड वालों ने ख़ाली पाकर लूटमार शुरूअ़ करदी तब इंगलिस्तानियों ने लाचार होकर बादशाह रूम से मदद मांगी मगर वहांसे कुछ भी मदद न मिली फिर सेक्सनीवालों से जो उसवक़्त में बड़े बहादुर थे कुमक चाही उन्होंने आकर वह क़िस्सह तो रफ़अ़ करदिया मगर इस मुल्क की दौलत और आबादी में अपने मुल्क से ज़ियादह

देखकर होते २ आप हाकिमहोगये और सब तरफ़से निडर होकर आपस में लड़नेलगे इंगलिस्तान में इस क़ौम सेक्सन के पन्द्रह-बादशाह हुए अख़ीर बादशाह का नाम ऐंडमंडरोईंतन था उससे सु॰ येन बादशाह डेनमार्कके बेटे कन्यूट ने आधा मुल्क लड़कर छीन लिया डेन क़ौमके तीन बादशाह हुए मगर इंगलैंड के लोगों ने उनके ज़ुल्मसे घबराकर फिर एगबर्ट की औलादमें से एडवर्ड तीसरे को बादशाह बनाया जब ये बे औलाद मरा तो हरलड़ दूसरा तख़्त पर बैठा उसको वलियम मनसूर नारमंडी ने मारकर तख़्त छीनलिया और इक्कीस बर्ष तक आप बादशाहतकी फिर वलियम रूफ़स ने तेरह बर्ष और हिनरी अव्वलने पैंतीस बर्ष स्टीवन ने अठारह बर्ष बादशाहतकी स्टीवन के मरनेके बअ़द हिनरी दू-सरा जो ख़ानदान सेक्सन और नारमन दोनोंका वारिसथा तख़्त नशीन हुआ दोसौ पैंतालीस बर्ष तक इस ख़ानदानके आठ बाद-शाह रहे सन् १३९९ ई॰से ६२ बर्ष तक लंकेसटर ख़ानदानके तीन बादशाह और सन् १४६१ ई॰से ख़ानदान यार्क के तीन बादशाह रहे सन् १४८५ ई॰से ख़ानदान ट्यूडर एकसौ अठारहबर्ष तक हुकू-मत करतारहा सन् १६०३ ई॰में मलिकह इलजिवैथ के बअ़द जेम्स अव्वल बादशाह हुआ तब इंगलैंड और स्काटलैंड में मेल होगया और निहायत अदल और इन्साफ़ के सबब से बादशाहत ख़ूब चमकी औरसल्तनत मिली हुई कहलाने लगी तबसे अब तक बे-खटके बादशाहत होरहीहै ज़ुल्म और बे इन्साफ़ी बिलकुल नहीं है अदल और इन्साफ़ और ग़रीब परवरी रऐयत पर मिहरबानी रोज़ बरोज़ ज़ियादहहै विद्याका रिवाज भी अच्छी तरह होरहा है लोग वहां के सच्चे और दियानतदार और मिहनती होते हैं मगर अकसर मिज़ाजके गम्भीर और रूखे होते हैं ॥

———

अट्ठावनवां सबक़ ।

घड़ीकाबयान ॥

घड़ी वह कलहै जिससे वक़ मग्रलूम होताहै हिंदुस्तान में वक़ मग्रलूम करने की तीन तरकीबें हैं मगरतीनों में ग़लती और ख़राबियां हैं एक धूप घड़ी जिसमें धूप की पहिचान से वक़्तमग्रलूम होताहै वह रात औरबदली में बिलकुल बेकारहै दूसरी रेत घड़ी उसमें बालू एक शी शेसे दूसरे शीशे में एक बारीक छेदकी राह से एक घंटे में जाती है उस में कोई निशान ऐसा नहीं होता है जिस से मिनट या पल वग़ैरह मग्रलूम हों और एक आदमी उलट पलटके लिये हर वक़ नज़र मिलाये हुए बैठा रहे सिवा इस के थोड़े दिनों में उस का छेद बालू की रगड़ से बढ़ जाता है तब वह बेकार होजाती है तीसरे पानी की घड़ी कि वह एक कटोरा होताहै जो पानी में पड़ा रहता है और उस में एक बारीक छेद की राह से जो पेंदे में होता है पानी कटोरे में आया करता है जब कटोरा भरकर डूब जाता है तो एक घंटा ख़ियाल करतेहैं उस मेंभी वही ख़राबी है जो रेतघड़ी में है युरूप के अक़्ल मंदोने दो घड़ियां एक क्लाक घड़ी दूसरी वाच इस तरकीब से बनाई हैं कि हर घड़ी के गोल दायरे के बराबर बारह हिस्से करके हर एक हिस्से का नाम दरजह रक्खा है और उन पर घंटे मग्रलूम होने के लिये ये हरूफ़ बतौर निशान के लिखदिये हैं जो कोई इन हर्फ़ों को याद कर

लेता है उस को घड़ी में वक़ मअ़लूम हो जाता है और हर एक दरजे के बराबर पांच २ हिस्से करके मिनट दरयाफ़ करने को उन पर भी निशान कर दिये हैं उस में दो सूइयां बड़ी छोटी लगा दीहैं वे घूमा करती हैं घंटे की छोटी सूई एक घंटे में एक अंक से दूसरेपर यअ़नी पांच दर्जे पर पहुंचती है और बड़ी सूई मिनट की उतनीही देर में बारहों अंकों यअ़नी साठ दरजों पर घूम जाती है युरूप के अ़क़्लमंदों ने रात और दिन को २४ घंटोंमे बांट दिया है और हर घंटे के साठ मिनट और हर मिनट के साठ सिकंड क़रार दिये हैं कलाक़ घड़ी बड़ी होती है और अक्सर ताक़ पर रक्खी रहती है और आपही आप कल के ज़ोर से घंटे २ पर बजा करती है बअ़ज़ घड़ियों में सिकंड की सूई भी छोटे से दायरह पर घूमा करती है उस से सिकंडके वक़ मअ़लूम होतेहैं॥

उनसठवांसबक़।

शहरलंडनकेबयानमें॥

लंडन इंगलैण्ड का पाय तख़्त है यहशहर दरिया टेम्स के दोनों किनारों पर उस के दहाने पर से जोमक़ाम नोर पर है पैंतालीश मील के फ़ासिले पर है इस शहर का अगले ज़माने का हाल ख़ूब मअ़लूम नहीं लेकिन इतना साबित होता है कि जब शाह एगवर्ट सब सैक्सनी रियासतों का मालिक होगया और ये सब मिल कर एक मज़बूत सलतनत होगई तो इस सलतनत का पाय तख़्त लंडन होगया और अगर्चिह बअ़द उस के इंगलेंड के बादशाही ख़ान दानों में कई बार अदला बदली हुई लेकिन वहां का पाय तख़्त लंडन ही रहा इसशहरकी हदें सहीमुक़र्रर करना मुशकिल है लेकिन ऐसा मअ़लूम होता है किइस की ज़ियादह से ज़ियादह लंबाई दसमील है और चौड़ाई छः मील लंडन को कितनाही छोटाख़ियाल कीजिये तो भी उसमेंइतने मुहल्ले हैं॥

नाम मुहल्लह	तअदाद आबादी सन् १८५१ई० तक
(१) ख़ास शहर लंडन	१२७८६९
(२) वेस्टमिन्स्टर	२४१६११
(३) टावरह मलेट् स	५३९१११
(४) फिन्सबरी	३२३७७२
(५) मेरीलिबोन	३७०९५७
(६) लम्बर	२५१३४५
(७) सथवर्क	१७२८६३
कुल तअदाद आबादी	२०२७५२८

ज़ाहिर होकि बीस वर्ष हुए जब कि यह आबादी शहर लंडन की शुमारकी गई थी अबतो उस शहर में क़रीब तीस लाख आदमी के हैं और उस का रक़बह भी अब बहुत बढ़गया कि हरसाल उस में छत्तीस मील तक मुहल्ले याबाज़ार बढ़ते जाते हैं इस शहर की आब वहवा सब बड़े शहरोंसे अच्छी है जैसे कि सन् १८५४ ई० में यहां सौ आदमियों में तीन आदमियों से भी कम मरेथे सन् १८५०ई० में इस शहर में बारह हज़ार नान बाई आठ हज़ार लुहार पांच हज़ार किताब बेचने वाले तीस हज़ार मोची तेईस हज़ार बढ़ई सोलह हज़ार मुहर्रिर आठ हज़ार बाग़बान पांच हज़ार तीनसौ सुनार चार हज़ार अहीर सात हज़ार भठियारे तेईस हज़ार दरज़ी पांच हज़ार घड़ी साज़ तीन हज़ार सौदागर पांच हज़ार हकीम थे और इन सबके नौकरों का ज़िक्र नहीं सिवा इसके लंडन में छः जहाज़ ख़ानेहैं यअनी उनमुक़ामों पर जहां ख़ास करके जहाज़ों पर असबाब लादा जाता है और उन पर से असबाब उतारा जाता है और अगले सफ़र के वास्ते उन की मरम्मत की जाती है सन् १८५६ई० में जो चीज़ें सौदागरी की लंडन से और मुल्कों में भेजी गई थीं उनकी क़ीमत अंदाज़ से छत्तीस करोड़ रुपये थी और जो चीज़ें और मुल्कों से

लंडन में आई थीं उनकी क़ीमत भी इसी के क़रीब थी क्योंकि हर सरज़मीन और हर वलायतकी पैदावार इंगलेंडके पायतख़्त में आती हैं लंडन की टकसाल जहां रुपयापर सिक्कह पड़ता है बड़ी ख़ूबसूरती के साथ उमदह उमदह कलों से आरास्तह है सन् १८५६ ई० में जिस क़दर सिक्कह इस टकसाल में तैयार किया गया था उस की तफ़सील यह है॥

सिक्कह सोनेके	६००२११४०
सिक्कह चांदीके..	४६२५२८०
सिक्कह तांबेके	११४१८०
कुल	६४०६०६६०

लंडन का बड़ा बैंकघर इंगलेंड का बैंकघर कहलाता है इस में आठसौ मुतसद्दी या मुहर्रिर काम करते हैं जिनकी तनख़ाह सालानह कमसे कम बीस लाख रुपया होती है इसके सिवाय और बैंकघर भी लंडन में हैं जिनमें कमसे कम साठ ख़ास और अट्ठाइस आम बैंकघर हैं जिनमें लोगोंका रुपया जमआ रहताहै लंडनमें खाने का बहुत बड़ा खर्चहै जैसे कि हरसाल अंदाजसे दो लाख चालीस हज़ार बैल सत्तह लाख भेड़ें अट्ठाईस हज़ार बछड़े बैंतीस लाख अड़तालीस हज़ार मुरग़ियां और बेशुमार जानवरोंका गोश्त लोग खाजातेहैं वहां पानीवालों की दश कम्पनियां यअ्नी ग़िरोहहैं जो पैंतीस लाख घरोंमें जिनमें नल लगेहैं पानी पहुंचाते हैं ये होज़ ख़ुद बख़ुद पानी से भर जाते हैं यअ्नी क़रीब ४०५१२६२ मन पानी हर रोज़ दिया जाता है लंडन में पानी के बअ्द शराब की क़दर ख़ास करके बियर यअ्नी जौ की शराब बहुत काम आतीहै लंडन में लकड़ीकी जगह कोयला ख़र्च करते हैं कि क़रीब १०८००००० मन कोयला सालाना सर्फ़ होताहै कोयले का सर्फ़ सर्दीकी ज़ियादती और कमी के मुवाफ़िक़ है तमाम शहर में गयास की रोशनी होती है इसलिये सोलह कारख़ाने

गयासके हैं और हर रोज़ क़रीब दोक्रिरोड़ घन फ़ीट गयास ख़र्चहोती है रात को सड़कों पर रोशनी ऐसी ख़ूब होती है कि किताब आसानी से पढ़लीजिये अगर्चिह लंडन बड़ा मालदार शहर है ताहम सन् १८५६ई० में ग़रीबों की परवरिश के लिये १३६०४६४० रुपया महसूल रिआया से लियागया उस में से ८७५२०४० रुपया ख़र्च हुआ लंडन के हर पेरिश यअनी मुहल्लह में एक ख़ैरात ख़ानह है जहां ग़रीब रहते हैं और उन्हें खाना और कपड़ा मिलता है और उन का इलाज़ होता है और यह सब मुफ़्त होता है औ ग़रीबों के लड़कों को उनके घरों पर तअलीम दीजाती है और वहां रोटी कपड़ा मिलताहै और कोई मुफ़ीद पेशह या हुनर उन्हें सिखाया जाता है हर ख़ैरात ख़ानह में एक शफ़ा ख़ानह मरदों के वास्ते है एक औरतों के लिये एक मकान मरदों के वास्ते एक औरतों के लिये एक रहने को मकान और मदर्सह लड़कों के वास्ते एक मकान और मदर्सह लड़कियों के लिये लंडन में क़रीब १०६१ गिरजे और २ मक़ाम इबादत के हैं और ४५६१ मदर्सह हैं जिनमें २५४२३८ बिद्यार्थी पढ़ते हैं सबसे बड़ा मदर्सह लंडन में क्रैस्ट्सहास्पिटल है जिसे शाह एडवर्ड छठे ने बनवाया था इस मदर्से में और उस की शाख़ में जो हर्टफ़र्ड में है १३०० लड़के पढ़ते हैं और ये सब मुफ़्त पढ़ाये जाते हैं और मुफ़्त की रोटी और कपड़ा पाते हैं उस मदर्सह का ख़र्च क़रीब ५८५०८० रुपये सालानह के है और इसी मदर्सह में केमडन साहब इतिहासक और रिचर्डसन साहब क़िस्सह नवीस और सैमुअल कोलरिज साहब कबि और पण्डित और चार्ल्स लैम्बख़ुतबा पढ़नेवाले ने तअलीम पाई थी वेस्टमिन्स्टर भी लंडन में एक मशहूर मदर्सह है जहां वेन जान्सन और ड्रैईडेन और लाक और गिबन साहब ने इल्म हासिल किया था चार्टरहौस भी एक मशहूर मदर्सह है जहां डाकृर बेरी और अडिसन और

स्टील और क्लेकस्टन और जान वेसली ने तअलीम पाई थी॥

साठवां सबक़।

लंडन के रमनों और शाही मकानों और गिरजों और पुलों और शफ़ाख़ानों के बयान में॥

लंडन में सात रमने आम लोगों की सैर के वास्ते हैं और तीन महल मलिकह मुअज़्ज़मा के हैं और पच्चीस से ज़ियादह शफ़ाख़ाने हैं महल तो कुछ ऐसे ख़ूबसूरत नहीं हैं लेकिन शफ़ाख़ाने बहुत अच्छे हैं जैसे कि एक शख़्स और किसी मुल्क का रहनेवाला लिखता है कि इंगलेंड में महल शाही शफ़ाख़ाने हैं और शफ़ाख़ाने महलशाही हैं सन् १८५८ई० में क़रीब १३६ अख़बारों के लंडन में जारी थे इन में से सोलह अख़बार हर रोज़ छपते थे लंडन में सब से ज़ियादह ख़ूबसूरत बकिंगहम पैलेस जिसे जान शिफ़ील्ड बकिंगहम के ड्यूक ने बनाया था जिस महल में मलिकह मुअ-ज़्ज़मा पैदा हुई थीं इस का नाम किन्सिंगृनपैलेस है इसी मकान में शाह विलियम तीसरे और मलिकह ऐन और शाह जार्ज दूसरे मरे थे तीसरा महल सेंटजेम्सपैलिस कहलाता है उसमें जो दरबार होता हैं वह भी इसी नाम से मशहूर है यह महल शाह हिनरी आठवें ने बनवाया था लंडन में सब से बड़ा गिरजा कलेसाई सेंटपाल है जिसे सरक्रिस्टोफ़र्ड ने बनवाया था और क़रीब ३५बर्ष के अर्सह में तैयार हुआ था इस गिरजे की बलन्दी३०० फ़ीट है और लम्बाई पूरब से पश्चिम तक ५१० फ़ीट और अरज़ उत्तर से दक्षिण तक २५० फ़ीट है और यह पत्थर का बना है और इस का रक़बह करीब दो एकड़ के है इस गिरजे में बअज बड़े २ नामी लोगों की क़बरें हैं जैसे ड्यूक आफ़ वलिंगटन सिपहसालार और नेलसन अमीर बहर यहीं गड़े हैं—दूसरा मशहूर गिरजा वेस्टमिनिस्टर है यह गिरजा सन् आठ सौ ईसवी से पेश्तर था यअनी इसे बने हुये हज़ार बर्ष से ज़ियादह हुए

लेकिन अकसर इमारत इस गिरजे की जो अब तक बाक़ी है शाह हिनरी तीसरेने बनवाई थी और सन् १२४५ई० में तैयार हो गई थी—इस गिरजे में बहुत से शाहज़ादे और शाहज़ादियां दफ़न हैं और जिस तरफ़ आंख उठा के देखिये समुद्र और खुश्की के लड़ाइयों के बहादुर और मुल्क के बन्दोबस्त के वास्ते अच्छी तदबीरें करने वाले और इतिहास कहनेवाले और हकीम और दीन के आलिम लोग और वकील लोग और तसवीर खींचनेवाले और नक़शे बनाने वाले और गाने वाले लोग व नकल करनेवाले ऐसे २ नामी लोगों के नाम क़बरों पर दिखाई देते हैं और हर रोज़ वहां नमाज़ होतीहै जिन मकानों में पार्लीमिंट की कचहरी होतीहै वह दर्या टेम्स के दोनों किनारों परहैं ये मकान एप्रेल सन् १८४० ई० में बनने शुरूअ हुये थे इनमें जाने की एक राह वेस्टमिनस्टरहाल से है यह मकान शाही शाह विलियम रूफ़स के वक्तमें बनाथा और यहीं वारिन हेस्टिंगस साहब गवर्नर जनरल हिंदुस्तानपर नालिश हुईथी और एक तुहमत उनपर यह भी लगाई गईथी कि इन्होंने अवध की बेगमोंसे बदसलूकी की है पार्लीमिंटमें जानेकी दूसरी राह जिसे बादशाही रास्ता कहते हैं एक बुर्जके नीचेसे जिसका नाम विक्टोरियाटावरहैऔर एकफाटक के अंदरसेहै जिसकी बलन्दी ६५फ़ीटहै मकानके अंदर उत्तर की तरफ़ एक मुरब्बअ घड़ीका बुर्ज बनाहै जिसकी बलन्दी ३०० फ़ीटहै उसमें वक्त मअलूम करने के लिये एक घंटा लगाहै जिसका वज़न ०२८ मनहै जब इस मकान के अंदर जाइये जिस में पहिला महकमह पार्लीमिंट का यअनी महकमह रईसों का होता है तोउसकी रंगामेज़ी और सोनेके मुलम्मोंसे निगाह चौंधा जाती है ख़ास करके तख़तशाही तो सोने चांदी और जवाहरात से लदा हुआहै मगर जो अच्छी२ कारीगरी इस मकानमेंहैं वह होस आफ़कामस यअनी आम लोगों के महकमह में नहींहै लंडन में जो बड़ा बुर्जहै उसे शाह बिलियम मनसूरने बनवाना शुरूअ कि-

याथा और उसके बेटे शाहबिलियम रूफ़स ने सन् १०९८ ई० में तमाम किया उस में से जिस क़दर बिलियम रूफ़स ने बनवाया था वह अब तक मौजूद है लंडन के वेबाग जिनमें हर क़िस्मके जानवर रहतेहैं देखनेके क़ाबिल हैं कि दुनियामें जितने उम्दह याअज़ीब जानवर हैं उनमें से अकसर इनबाग़ों में हैं जैसे—बन्दर शेर—बबरशेर---भेड़िये—कसार—रीछ—हाथी—हिल—गैंडे—दरयाई घोड़े—शुतरमुर्ग—ज़िराफ़ह—हरक़िस्मकेसांप—उक़ाब—शाहगिद्ध—तेंदुयेचीते और २ बहुत सेहेवानात जिनका बयान नहीं होसक्ता लंडन में दर्या टेम्स परनैापुलहैं सबसे बड़े पुलका तूल९०४ फ़ीट है और अर्ज ५३ फ़ीटहै और उसका बीचका दर १५० फ़ीट खुला हुआहै उसमें पांच दर हैं और उसकी बनवाई में दो किरोड़ रु० खर्चहुआथा दूसरे पुलमें जिस का नाम सथवर्कब्रिज है नैाद रहैं और एक पत्थर का खम्भहैं इन पुलोंमें सब से ज़ियादह अज़ीब और क़ाबिल तारीफ़ बाटरलूब्रिजहै जिसकी बनबाईमें एककिरोड़ पन्द्रहलाख रुपया सर्फ़हुआथा इसमें नैादरहैं और यह १३८०फ़ीटलंबा और४२ फ़ीटचोड़ाहै औइसका हरएकदर १२०फ़ीट चोड़ाहै और अंडे की शक्ल का है यह पुल बिलियम रन्नी ने बनायाथा अलावह इन के दोनलदर्या टेम्स के अंदर जारीहैं इनमेंसे जो बहुत बड़ानल है वह ईंटों काहै और उसमें दो रास्ते बनेहुये हैं हरएक रास्ता १२ फ़ीट चोड़ा और १५ फ़ीटऊंचाहै लंडन में बारह कैदख़ाने हैं इनमे सबसे मशहूर क़ैदखानह न्युगेटहै और ७१ बड़ी मुहरियांहैं और एक हज़ार और मुहरियांहैं और दशया बारह रेलेहैं ४३१२ छोटी डाक गाड़ियां और १०८९ बड़ी डाकगाड़ियां हर छोटीडाक गाड़ीमें दो आदमी साथ असबाबके जा सकतेहैं और फ़ी मील चार आने किराया देना पड़ताहै और हरएक बड़ी डाक गाड़ीमें कोई २३ आदमी समा सकते हैं और उस में आदमी ६ मील दो आने किरायह देकर जासकताहै फ़क़त इसके सोटागरोंमेंसे एक कम्पनी वा गरोहने एक हफ़्ते में १०८१८० रुपया कमाया तारबर्क़ी के

सौदागरों के बीस स्टेशन यअ़नी ठेकाने लण्डन मेंहैं थोड़ा सा महसूल देकर वहांसे सारी दुनियां में ख़बर भेज दीजिये लंडनके अंजामकी निस्बत अक्सर लोगोंने पेशगोइयां की हैं अब यह शहर बहुत बढ़ता ज़ाताहै लेकिन जितनावह बढ़ताहै उससे ज़ियादह इसमें आमदोरफ़्त के असबाब भी बढ़ते जाते हैं और इल्मों व हुनरों में भी तरक़्क़ी होती जातीहै इङ्गलिस्तान के अजायबख़ाने का ज़िक्र भी ज़रूरहै इस अजायबख़ानह में ऐसेर क़दीम ज़माने की चीज़ें जमअ़हैं जिनका मिस्ल नहीं है जानवर दुनियां के उमदह नमूने और एक बड़ा कुतुबख़ानह इस में है इस कुतुबख़ाने में क़रीब छः लाख किताबके हैं और हरसाल तेरह हज़ार किताबें बढ़ती जातीहैं और एक बड़ासा पढ़ने का कमरह बनाहै उसमें मुनासिब असबाब और आलात इल्मी रक्खे हैं और सब किताबें एक फ़िहरिस्त में मुन्दरिजहैं इस कुतुबख़ाने का उमदह इन्तिज़ाम और फ़िहरिस्त किताबों का मअ़कूल तरतीब फ़क़त इस के मुहतमिम आला पनिज्जी साहब की सई व मशक़्क़तका सबब है इस कुतुबख़ाने में एक उमदह ख़ज़ानह लिखी हुई किताबों का भी है लेकिन जो छपीहुई किताबें यहां जमअ़हैं उनकी फ़िहरिस्त अभी तमाम नहींहुईहै इस फ़िहरिस्त की तीनसौ जिल्दें हैं सिवा इसके और बहुतसे उमदह कुतुबख़ाने लण्डनमें हैं यहभी बयान करना चाहिये कि सौदागरीके आसानी के वास्ते लंडन में ज़मीन के अंदर रेलगाड़ी बनाई गई है इसमें रातदिन ग्यास की रोशनी रहतीहै और इसके अंदर ताज़ी हवा जाने के ज़रिये बनाये गयेहैं और ज़मीन के अंदर एक पारसेल कम्पनी यअ़नी किताबें वग़ैरह लेजानेकी डाकके सौदागरहैं जिन की गाड़िया फ़क़त हवाके ज़ोर से चलती हैं फ़क़त ॥

॥ इति ॥